04 - कृत्रिम बुद्धिमत्ता : पाइड पाइपर को आमंत्रण

05 - सनातन संस्कृति की ध्वजा विश्व में फहरा रही गीता प्रेस

A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 11 दिसंबर, 2024

06 - ठंड ने फिर पकड़ी रफ्तार, रात का तापमान 8.4 डिग्री पर पहुंचा

07 - म.प्र.में एक लाख पदों पर भर्तियां शुरू

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-101 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

तेरी मुश्किल न बढ़ाऊँगा चला जाऊँगा
अश्क आँखों में छुपाऊँगा चला जाऊँगा
अपनी दहलीज़ पे कुछ देर पड़ा रहने दे
जैसे ही होश में आऊँगा चला जाऊँगा
ख्वाब लेने कोई आए कि न आए कोई
मैं तो आवाज़ लगाऊँगा चला जाऊँगा
चंद यादें मुझे बच्चों की तरह प्यारी हैं
उनको सीने से लगाऊँगा चला जाऊँगा
मुद्दतों बाद मैं आया हूँ पुराने घर में
खुद को जी भर के रुलाऊँगा चला जाऊँगा
इस जज़ीरे में ज़ियादा नहीं रहना अब तो
आजकल नाव बनाऊँगा चला जाऊँगा
मौसम-ए-गुल की तरह
लौट के आऊँगा 'हसन'
हर तरफ़ फूल खिलाऊँगा चला जाऊँगा

- हसन अब्बासी

प्रसंगवश

असद के बाद भारत-सीरिया संबंधों का भविष्य क्या होगा?

सुमेधा पाल

वैसे तो भारत की राजधानी दिल्ली और सीरिया की राजधानी दमिश्क के बीच हज़ारों किलोमीटर की दूरी है। लेकिन, सीरिया के घटनाक्रम पर दिल्ली की नज़र भी बनी हुई है।

सीरिया लंबे समय से भारत का सहयोगी रहा है और यहां के घटनाक्रम केवल मध्य पूर्व तक ही सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि ये अप्रत्याशित तरीकों से भारत को भी प्रभावित कर सकते हैं। भारत और सीरिया के बीच संबंध दोस्ताना ही रहे हैं। सीरिया में बशर अल-असद शासन का अंत एक अहम घटनाक्रम है, जो न केवल भारत-सीरिया के रिश्तों को प्रभावित करेंगे बल्कि व्यापक रूप से देखें तो ये तेज़ी से दो प्रतिस्पर्धी ध्रुवों में बंटती दुनिया के लिए महत्वपूर्ण पल है।

सीरिया में इस्लामी विद्रोहियों ने रविवार को राष्ट्रपति बशर अल-असद को सत्ता से बाहर करने की घोषणा की। विद्रोहियों के दमिश्क पर नियंत्रण होने के बाद असद ने रूस में शरण ली है। इसके साथ ही देश में 13 साल के गृहयुद्ध का अंत हो गया। असद का पतन और उसके बाद की अनिश्चितता इस क्षेत्र में भारत के राजनीतिक और आर्थिक हितों के लिए चिंता का कारण बन रही हैं।

भारत और सीरिया के बीच द्विपक्षीय संबंध पश्चिम एशिया में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समय से ही रहे हैं। दोनों देशों के बीच प्राचीन सभ्यताओं का भी मेल-मिलाप रहा है। भारत और सीरिया के राष्ट्राध्यक्षों के बीच द्विपक्षीय दौरे की शुरुआत 1957 में हुई, जब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू वहां गए थे। उसी साल सीरिया के राष्ट्रपति शुक्री अल-कुएतली ने नई दिल्ली यात्रा की थी।

भले ही खाड़ी देशों की तरह सीरिया में भारत की एक बड़ी आबादी नहीं रह रही हो, लेकिन भारत ने हमेशा बशर अल-असद के शासन के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे। सीरिया में गृहयुद्ध की शुरुआत 2011 में हुई, लेकिन भारत के सीरिया में असद सरकार के साथ संबंध बरकरार रहे। भारत ने लगातार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अनुसार सीरिया के नेतृत्व में संघर्ष के समाधान का समर्थन किया है।

भारत ने सीरिया के गृह युद्ध के चरम के दौरान भी दमिश्क में अपना दूतावास बनाए रखा। अब जब गृह युद्ध ख़त्म हो गया है, तो भारत के सामने नई चुनौतियां आ गई हैं। तअसद परिवार (पहले हाफ़िज़ अल-असद और बाद में बशर अल-असद के शासन में) हमेशा ही अहम मुद्दों ख़ास तौर पर कश्मीर के मामले में भारत का समर्थक रहा है। जब कई इस्लामिक देश कश्मीर के मामले में पाकिस्तान के रुख़ के साथ खड़े थे, तब सीरिया उन चुनिंदा देशों में शामिल था, जो भारत के साथ था।

असद परिवार का धर्मनिरपेक्ष शासन भारत के अपने सिद्धांतों के साथ मेल खाता था, जिससे सहयोग के लिए एक मज़बूत आधार बना। 2019 में भारत ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को समाप्त कर दिया था, जिसे सीरियाई सरकार ने भारत का 'आंतरिक मामला' बताया था। भारत भी ऐतिहासिक तौर पर गोलान हाइट्स पर सीरिया के दावे का समर्थन करता रहा है, जबकि इसराइल इसके खिलाफ़ रहा है।

बशर अल-असद का पतन सीरिया में आईएसआईए समेत अन्य चरमपंथी समूहों के उभार का कारण भी बन सकता है। जब इस्लामिक स्टेट की ताकत चरम पर थी, तो रूस और ईरान के समर्थन से सीरिया ने इसकी ताकत ख़त्म की थी। बदले हालात में भारत के लिए इस्लामिक स्टेट जैसे गुट ख़तरा हैं।

मध्य पूर्व के विशेषज्ञ कबीर तनेजा (ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन) ने कहा, 'भारत का दृष्टिकोण हमेशा यह रहा है कि भले ही सीरिया में घरेलू समस्याएँ हों लेकिन हमारे पास 'प्लान बी' होना चाहिए। हमें एक और लीबिया की स्थिति नहीं चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश, मुझे लगता है कि यही सीरिया की दिशा है, और यह वही ट्रेंड है, जिसे भारत अफ़ग़ानिस्तान में 2021 में देख चुका है।'

तनेजा ने यह भी कहा, 'मुझे लगता है कि भारत अपने संबंध बनाए रखने की कोशिश करेगा। चाहे वह तालिबान का कब्ज़ा हो, या एचटीएस का दमिश्क पर कब्ज़ा। ये आतंकवादी संगठन अंततः सरकार चला रहे हैं। चिंता ये है कि अगर भारत एचटीएस से बात करना शुरू करता है, तो कल कश्मीर में आतंकवादी संगठन यह कह सकते हैं कि आप उनसे बात कर रहे हैं, तो हमसे क्यों नहीं? यह एक बहुत ही नाजुक संतुलन है, जिसे भारत को बनाए रखना होगा।'

कूटनीति के अलावा, भारत-सीरिया संबंधों में आर्थिक सहयोग और व्यापार भी एक बड़ा आधार है। भारत से सीरिया को निर्यात किए जाने वाले उत्पादों में कपड़े, मशीनरी, और दवाइयां शामिल हैं, जबकि वहां से आयात किए जाने वाले उत्पादों में कच्चे माल जैसे रॉक फॉस्फेट और कपास शामिल है।

भारत ने कई क्षेत्रों में सीरिया के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें पावर प्लांट के लिए 240 मिलियन अमेरिकी डॉलर का क्रेडिट, आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर, स्टील प्लांट आधुनिकीकरण, तेल क्षेत्र में सहयोग, चावल, दवाइयां और वस्त्रों के महत्वपूर्ण निर्यात शामिल हैं। जुलाई 2023 में, तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री वी मुरलीधरन ने दमिश्क का एक महत्वपूर्ण मंत्री स्तरीय दौरा किया था। भारत ने सीरिया के तेल क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण निवेश किए हैं। पहला 2004 में ओएनजीसी और आईपीआर इंटरनेशनल के बीच तेल और प्राकृतिक गैस की तलाश के लिए करार है।

दूसरा ओएनजीसी और चीन के सीएनपीसी द्वारा सीरिया में एक कनाडाई कंपनी में 37 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने के लिए किया गया एक संयुक्त निवेश। साल 2008 में, बशर अल-असद भारत के दौरे पर आए थे। जहां उन्होंने कृषि सहयोग और सीरिया के फॉस्फेट संसाधनों पर अध्ययन करने की योजनाओं को मंजूरी दी थी। भारत ने सीरिया में एक आईटी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया था।

पश्चिम एशिया मामलों के जानकार डॉ. अशुतोष सिंह कहते हैं, 'पूरा पश्चिम एशिया ज़्यादातर महाशक्तियों के लिए 'गार्डन किचन' है। भारत हमेशा गुटनिरपेक्ष आंदोलन और उपनिवेशी इतिहास के कारण, पश्चिम एशिया के अधिकांश देशों के साथ अच्छे रिश्ते बनाए रखता है। भारत के लिहाज से देखें, तो सीरिया का घटनाक्रम भारत को कई तरह से प्रभावित कर सकता है। इसके दूरगामी प्रभाव होंगे। आप जो सीरिया में कदम उठाएंगे, उनसे आपके ईरान के साथ रिश्ते प्रभावित होंगे। और फिर ये इजराइल के साथ आपके रिश्ते प्रभावित करेगा। लेकिन यहां सबसे ज़्यादा दिक्कत इसराइल की भूमिका को लेकर है, जो अब गोलान हाइट्स बफ़र ज़ोन में प्रवेश कर चुका है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

पहाड़ों में बर्फबारी

'शीतलहर' से कांपा उत्तर भारत

● बर्फीली हवाओं से 10 राज्यों में बढ़ गई जबरदस्त ठिठुरन

घने कोहरे के साए में बिहार-झारखंड और पश्चिम बंगाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय के ऊपरी इलाकों में शुरू हुई बर्फबारी का असर मैदानी राज्यों तक पहुंच गया है। जम्मू कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में पिछले 4 दिन से हो रही बर्फबारी के बाद ठंड बढ़ गई है। मंगलवार को बर्फीली हवाओं के असर से सौराष्ट्र, कच्छ, हरियाणा, दिल्ली, चंडीगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड में शीतलहर चल रही है। वहीं, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल, सिक्किम, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा में घना कोहरा छाया हुआ है। सोमवार को श्रीनगर में इस मौसम का सबसे कम तापमान -5.4 डिग्री दर्ज किया गया, जबकि सोनमर्ग -9.7 डिग्री के साथ सबसे ठंडा रहा। गुलमर्ग में पारा -9.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उत्तराखंड के केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम में सोमवार को सीजन की पहली बर्फबारी हुई। इसके बाद राज्य सकरार ने दोनों जगह चल रहे विकास कार्य रोक दिए हैं। इधर दक्षिण भारत में एक बार फिर बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। तमिलनाडु, पुडुचेरी और कर्नाटक में तेज आंधी के साथ बारिश हो सकती है। बर्फीली हवाओं की वजह से मध्यप्रदेश में ठिठुरन बढ़ गई है। भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत प्रदेश के 16 शहरों में रात का टेम्प्रेचर 12 डिग्री से नीचे है। राजगढ़, गुना में पारा सबसे कम है। 11 दिसंबर से प्रदेश में कोल्ड वेव यानी, सर्द हवाएं भी चलने लगेंगी। अगले 48 घंटे के दौरान दिन-रात के तापमान में गिरावट हो सकती है। खासकर रात में पारा 2-3 डिग्री तक लुढ़क सकता है। इससे कई शहरों में टेम्प्रेचर 10 डिग्री के नीचे पहुंच जाएगा। मंगलवार को पूरे राजस्थान में शीतलहर का अलर्ट जारी किया गया है। 12 जिलों में शीतलहर का असर 3 दिन तक मौसम ऐसा ही रहेगा।

दिसंबर की सर्दी ने 2 साल का रिकॉर्ड तोड़ा

म.प्र.में दिन का तापमान 4 डिग्री तक गिरा

भोपाल (नप्र)। बर्फीली हवाओं की वजह से मध्यप्रदेश में ठिठुरन बढ़ गई है। इससे भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत प्रदेश के कई शहरों में रात का टेम्प्रेचर 10 डिग्री से नीचे है। पचमढ़ी में पारा सबसे कम है। अगले 24 घंटे में टेम्प्रेचर और भी लुढ़केगा। वहीं, 11 दिसंबर से प्रदेश में कोल्ड वेव यानी, सर्द हवाएं भी चलने लगेगी। सोमवार को भोपाल,

इंदौर समेत कई शहरों में दिन के पारे में 2 से 4 डिग्री तक की गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग ने 11, 12 और 13 दिसंबर को धार, गुना-अशोकनगर में कोल्ड वेव चलने का अलर्ट जारी किया है। आम तौर पर दिसंबर के आखिरी सप्ताह में कोल्ड वेव चलती है, लेकिन जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और लद्दाख में बर्फ गिरने से सर्दी बढ़ी है।

भोपाल में दिसंबर की सर्दी ने 2 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। एक ही रात में पारा 4.5 डिग्री लुढक कर 7.8 डिग्री पहुंच गया, जो पिछले दो साल में सबसे कम है। 2022 और 2023 में न्यूनतम तापमान 8.6 और 8.8 डिग्री रहा था। मंगलवार सुबह से ही सर्द हवाएं चल रही हैं। जिससे लोग ठिठुर गए हैं।

मौसम विभाग के अनुसार, बर्फीली हवाओं की वजह से ठिठुरन बढ़ी है, जो आने वाले दिनों में जारी रहेगी। ऐसे में दिन और रात दोनों ही ठंडे रहेंगे। सर्द हवा की वजह से मंगलवार में दिन का तापमान लुढक सकता है। सोमवार को अधिकतम तापमान 23.4 डिग्री रहा था।

दिसंबर में कड़ाके की ठंड का ट्रेंड

भोपाल में दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में कड़ाके की ठंड का ट्रेंड है, लेकिन इस बार पहले पखवाड़े में ही तेज सर्दी शुरू हो गई है। मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 10 साल में रात का टेम्प्रेचर 9 डिग्री के नीचे ही रहा। वहीं, 58 साल पहले, 11 दिसंबर 1966 को पारा 3.1 डिग्री तक पहुंच चुका है, जो ओवर ऑल रिकॉर्ड है। वर्ष 2021 में तापमान 3.4 डिग्री रहा था।

10 में से 5 साल पारा 30 डिग्री के पार

पिछले 10 साल में जहां रातें ठंडी रही। वहीं, दिन में टेम्प्रेचर बढ़ा हुआ रहा। साल 2020 में 7 दिसंबर को तापमान 32.6 डिग्री तक पहुंच गया था। वहीं, 10 में से पांच साल दिन का टेम्प्रेचर 30 डिग्री से ज्यादा ही रहा।

नवंबर में रिकॉर्ड तोड़ चुकी ठंड

बता दें कि इस बार ठंड का असर ज्यादा है। नवंबर में 36 साल का रिकॉर्ड ठंड तोड़ चुकी है। वहीं, दिसंबर की पहली ही रात पारा 8.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो पिछले साल से कम है। यानी, पिछले साल का रिकॉर्ड तो टूट ही गया है।

उन्हें यहां बस तमाशा करना है फिर छुट्टी मनाने विदेश जाना है

● राहुल गांधी पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू का बड़ा हमला, की आलोचना

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने मंगलवार को नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधा है। कांग्रेस ने सोमवार को संसद में अडानी मामले को लेकर विरोध प्रदर्शन किया था। जिसके बाद केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने राहुल गांधी की आलोचना की और कहा, राहुल गांधी को तमाशा करने और प्रधानमंत्री को गाली देने में मज़ा आता है, लेकिन अन्य सांसदों की भी उन लोगों के प्रति जिम्मेदारी है जिन्होंने उन्हें चुना है। उन्हें बस यहां तमाशा करना है और फिर अपनी छुट्टियों का आनंद लेने के लिए विदेश जाना है। संसद का शीतकालीन सत्र अलग-अलग मुद्दों को लेकर पक्ष और विपक्ष के हंगामों से गुजर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी से मुख्यमंत्री यादव ने की सौजन्य भेंट

प्रधानमंत्री को जीआईएस-2025 और केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के भूमि-पूजन के लिए दिया न्योता

● केन-बेतवा प्रोजेक्ट का भूमिपूजन 25 दिसंबर को

● राज्य सरकार के एक वर्ष के कार्यों से कराया अवगत

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को संसद भवन नई दिल्ली में सौजन्य भेंट की। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री मोदी को भोपाल में 24 फरवरी 2025 में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के भूमि-पूजन एवं शिलान्यास के लिये आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी को राज्य सरकार द्वारा एक वर्ष में किये गये कार्यों से अवगत कराकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। इधर भोपाल में सोमवार देर शाम कैबिनेट की बैठक में सीएम ने मंत्रियों को पीएम से हुई मुलाकात से अवगत भी कराया और बताया कि 26 दिसंबर को पचमढी में चिंतन शिविर होगा.

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राज्य सरकार

अपने कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने पर 11 दिसम्बर 2024 से 2 महत्वपूर्ण कार्यक्रम प्रारंभ कर रही है। पहला कार्यक्रम मुख्यमंत्री जन-कल्याण पर्व 11 से 26 दिसम्बर 2024 तक आयोजित होगा। यह प्रदेश के समग्र विकास और जनहित पर आधारित रहेगा। दूसरा कार्यक्रम मुख्यमंत्री जन-कल्याण अभियान 11 दिसम्बर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक चलेगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विकास के प्रमुख 4 स्तंभ युवा, नारी, किसान और गरीब के सशक्तिकरण और उनके कल्याण के लिए चिन्हित योजनाओं में शत-प्रतिशत सेचुरेशन का लक्ष्य प्राप्त करना है। अभियान में आमजन से जुड़ी 63 शासकीय सेवाओं से संबंधित आवेदकों की समस्याओं का निराकरण भी किया जायेगा।

180 साल पुरानी नूरी जामा मस्जिद पर चला बुलडोजर

● योगी सरकार ने अवैध हिस्से को किया जमींदोज, सख्त रही सुरक्षा ● फतेहपुर में योगी सरकार ने अतिक्रमण के खिलाफ लिया एक्शन

फतेहपुर (एजेंसी)। यूपी के फतेहपुर जिले में योगी सरकार ने अतिक्रमण के खिलाफ बड़ा एक्शन लिया है। 180 साल पुरानी नूरी जामा मस्जिद के अवैध हिस्से को गिरा दिया गया है। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। पीडब्ल्यूडी विभाग की ओर से मस्जिद को गिराने के लिए एक महीने पहले नोटिस दिया था। यह मस्जिद ललौली कस्बे में बांदा सागर मार्ग में बनी थी। यूपी सरकार ने मंगलवार को कार्रवाई से पहले मौके पर भारी पुलिस बल तैनात किया। एएसपी, एडीएम, आरएएफ, पीएसी समेत कई थानों का फोर्स मौके पर मौजूद हैं। मौके पर पांच सीओ, 10 थाना प्रभारी, 200 कांस्टेबल, हेड कांस्टेबल और एक कंपनी पीएसी व जवान मौजूद हैं। दरअसल

यह मस्जिद सड़क चौड़ीकरण के दायरे में आ रही थी। एडीएम फतेहपुर ने पहले ही इस मामले में नोटिस जारी किया था। पुरानी मस्जिद को नहीं गिराया गया है। केवल जो हिस्सा अतिक्रमण कर आगे बढ़ाया गया था, उसे ही गिराया गया है। नेशनल हाईवे-335 को चौड़ा किया जा रहा है। इसी के दायरे में यह मस्जिद आ रही थी। इस मामले को लेकर 13 दिसंबर को हाईकोर्ट में सुनवाई होनी है। मस्जिद की ओर से कोर्ट में एक याचिका दाखिल की गई थी लेकिन कोर्ट ने इस मामले में स्टे नहीं दिया था। इसके बाद प्रशासन ने इस मस्जिद को जमींदोज कर दिया। पूरे इलाके में ड्रोन से नजर रखी जा रही है। सड़क चौड़ीकरण को अतिक्रमण के खिलाफ यहां अभियान चल रहा है।

टारगेट 1 करोड़, जुड़े सिर्फ 30 लाख लोग

● बंगाल में भाजपा के सदस्यता अभियान को झटका, बढ़ाई गई तारीख

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में भाजपा के सदस्यता अभियान को झटका लगा है। सदस्यता अभियान के लिए समय सीमा बढ़ाने के बावजूद पार्टी राज्य में अपना टारगेट पूरा नहीं कर पाई है। शनिवार को भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और बंगाल प्रभारी सुनील बंसल ने मंगल पांडे के साथ पार्टी की राज्य इकाई को फटकार लगाई है। पार्टी ने कहा है कि 15 दिन की समय सीमा बढ़ाने के बाद भी एक करोड़ का लक्ष्य पूरा करने में फेल रहना स्वीकार्य नहीं है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c | न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 11 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बिहार को केन्द्र का तोहफा, 10 शहरों में बनेंगे एयरपोर्ट

मुजफ्फरपुर-मधुबनी का भी पूरा होगा सपना, सुपौल, भागलपुर का भी नाम

पटना (एजेंसी)। बिहार में हवाई सेवाओं का विस्तार होने वाला है। केंद्र सरकार की उड़ान 5.2 योजना के तहत राज्य के 10 शहरों को हवाई मार्ग से जोड़ा जाएगा। इन शहरों में छोटे विमान उड़ान भरेंगे। इस खबर की घोषणा 10 दिसंबर 2024 को राज्यसभा में की गई। केंद्र सरकार को इन शहरों से हवाई सेवा शुरू करने के लिए बोलियां मिली हैं। इस योजना से आम लोगों को हवाई यात्रा आसान होगी। बिहार सरकार से हवाई अड्डों के विकास के लिए जमीन उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी उड़ान 5.2 योजना बिहार के 10 शहरों के लिए नई उड़ान लेकर आएगी। इन शहरों में सुपौल का वीरपुर, भागलपुर का सुल्तानगंज, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, चंपारण का वाल्मीकि नगर और रक्सौल, नालंदा का राजगीर,

मधुबनी और सारण का छपरा शामिल हैं। यहां से छोटे विमानों का संचालन शुरू होगा, जिससे लोगों को यात्रा करने में आसानी होगी। ये जानकारी 10 दिसंबर 2024 को राज्यसभा में केंद्रीय मंत्री की ओर से दी गई। केंद्र सरकार को इन शहरों से हवाई यात्रा शुरू करने के लिए कई बोलियां मिली हैं। अब सरकार इन शहरों से हवाई सेवा शुरू करने की संभावनाएं तलाश रही है। हवाई अड्डों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने बिहार सरकार से जमीन उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। बिहार सरकार की सहमति और पुष्टि मिलने के बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होगी। इससे राज्य के विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

'गीता जयंती' पर बनेगा गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

5 हजार से अधिक आचार्य करेंगे 'कर्म योग' का सस्वर पाठ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी लीलाओं और आदर्शों के माध्यम से समूचे समाज को प्रेरणा दी है। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और पवित्र धर्मग्रंथ 'गीता' की शिक्षा से प्रदेशवासियों के जीवन को आलोकित करने और सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए गीता जयंती पर बड़े स्तर पर गीता पाठ किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के आशीर्वाद से धन्य भूमि मध्यप्रदेश में गीता जयंती के पावन पर्व के अवसर पर 'गीता पाठ का गिनीज विश्व रिकॉर्ड' बनाए जाने का अनूठा पावन प्रयास किया जा रहा हैं। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव अंतर्गत 11 दिसंबर को लाल परेड ग्राउंड में सुबह 10 बजे राज्य स्तरीय कार्यक्रम में पहली बार 5 हजार से अधिक आचार्यों द्वारा गीता के तृतीय अध्याय 'कर्म योग' का सस्वर पाठ कर विश्व रिकॉर्ड में दर्ज कराने की दावेदारी जताएंगे। राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान श्रीमदभगवद पुराण और गौ एवं गोपाल चित्र प्रदर्शनी का संयोजन किया जायेगा। साथ ही साधो बैंड मुंबई के द्वारा भक्तिमय गीतों की सुरमई प्रस्तुति दी जाएगी। विशेष रूप से मध्यप्रदेश में आ रहे पर्यटकों और आगंतुकों को गीता की महिमा से अवगत कराने के लिए प्रदेश के होटलों में श्रीमद्भगवद्गीता, वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस की एक-एक प्रति रखने की पहल भी की जाएगी। उल्लेखनीय है कि मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के अगले दिन गीता जयंती का पर्व मनाया जाता है। इस तिथि पर मोक्षदा एकादशी व्रत भी किया जाता है। पंचांग के अनुसार 11 दिसंबर को गीता जयंती है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा 5 हजार वर्ष पहले कौरव-पांडवों के युद्ध के बीच अर्जुन को कर्मवाद की शिक्षा प्रदान करने से धर्मग्रंथ 'गीता' की रचना हुई।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना

आज दसवीं किश्त के मिलेंगे रूपये 1572.75 करोड़

भोपाल (नप्र)। 'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना' योजना ने हितग्राही महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण बदला है। समय पर खातों में पैसे आने से सभी प्रकार की आर्थिक गतिविधियों का प्रबंधन करना भी लाड़ली बहनों के लिए आसान हो गया है। 'मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान' के शुभारंभ में 11 दिसम्बर को योजना के 1.29 करोड़ हितग्राही बहनों को 10वीं किश्त के रूपये 1572.75 करोड़ रूपये खातों में भेजे जायेंगे।

संक्षिप्त समाचार

जगदीश धनखड़ के खिलाफ एकजुट हुआ 'इंडिया' कुनबा

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का शीतकालीन सत्र जारी है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के जोरदार हंगामे की वजह से लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही सही से नहीं चल पा रही है। इसी बीच, इंडिया अलायंस ने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को पद से हटाने के लिए

अविश्वास प्रस्ताव पेश कर दिया है। इस बात की जानकारी कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर दी है। मंगलवार को फिर से राज्यसभा की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। अविश्वास प्रस्ताव के संबंध में करीब 70 सांसदों ने साइन किए हैं। इसमें कांग्रेस, बंगाल की सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस, अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी, अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी, तमिलनाडु की डीएमके और लालू यादव की राष्ट्रीय जनता दल के सदस्य शामिल हैं।

अमरीका-इजराइल के बाद तुर्की के हमले से दहला सीरिया

दमिश्म (एजेंसी)। सीरिया में असद सरकार के पतन के बाद दूसरे देशों के हमले तेज हो गए हैं। इजराइल ने सीरिया के दक्षिणी, अमेरिकी ने मध्य और तुर्किये से जुड़े रिबेल फोर्स ने उत्तरी इलाके पर हमला किया है। रॉयटर्स के

मुताबिक तुर्किये के रिबेल फोर्स ने सीरिया के उत्तरी इलाके मनबिज पर कब्जा कर लिया है। कुर्दिश सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्स ने 2016 में विद्रोहियों को हराकर मनबिज पर कंट्रोल हासिल किया था। मनबिज में एसडीएफ की हार के बाद कुर्द लड़ाकों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए अमेरिका और तुर्किये के बीच सोमवार को समझौता हुआ है।

- कानून तो मैया बहुसंख्यकों से चलता है...

जस्टिस शेखर यादव के बयान पर 'सुप्रीम' संज्ञान

प्रयागराज (एजेंसी)। इलाहाबाद हाई कोर्ट के जस्टिस शेखर कुमार यादव का वीएचपी के कार्यक्रम में दिए गए बयान का मुद्दा गहरा गया है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट से शिकायत की गई थी। अब इस पर सुप्रीम कोर्ट एक्शन मोड में दिख रहा है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को

पत्र भेजकर जस्टिस यादव के खिलाफ शिकायत की गई थी। इस संबंध में अब सामने आया है कि सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के जस्टिस शेखर कुमार यादव की ओर से दिए गए एक भाषण की अखबारों में प्रकाशित रिपोर्ट का संज्ञान लिया है। सुप्रीम कोर्ट की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि इस संबंध में हाई कोर्ट से विवरण और जानकारी मांगी गई है।

स्कूलों में पढ़ाए जाएंगे ट्रैफिक रूल, पुलिस करेगी मदद

स्कूल शिक्षा मंत्री बोले, जैसे बच्चे संस्कृति सीखते हैं वैसे ही यातायात के नियम सीख जाएंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में प्राथमिक से लेकर आठवीं कक्षा तक के स्टूडेंट्स को अलग-अलग स्तर पर यातायात के नियमों का पाठ पढ़ाया जाएगा। स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि इसके लिए आगामी शिक्षा सत्र से पाठ्यक्रम में ऐसे प्रबंध किए जाएंगे। नई शिक्षा नीति में भी इसको लेकर प्रावधान करने को कहा गया है। इसलिए सरकार नए शिक्षा सत्र से इस पर फोकस करेगी। इसके लिए पुलिस विभाग ने भी सहमति दी है ताकि बच्चों के अवेयर होने से सड़क दुर्घटनाओं को रोकने में मदद मिल सके। स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि स्कूल शिक्षा विभाग स्कूली छात्रों को यातायात के नियमों का पाठ पढ़ाने की कवायद शुरू करेगा। मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि जैसे हम अपने बच्चों को घर में संस्कृति की बातें सिखाते हैं, उसी तरह इसके लिए काम करना होगा।

उन्होंने कहा कि बड़े होने पर कोई चीज सीखने से अच्छा है बचपन से ही

छोटे-छोटे पाठ के माध्यम से बच्चों को सीख दी जाए। स्कूल शिक्षा मंत्री ने कहा कि बाल मन को समय रहते ही अगर कोई बात सिखाई जाए तो बेहतर तरीके से और आसानी से समझ आती है। यातायात के नियमों का पालन कैसे होता है और कैसे नियमों का उल्लंघन होता है। यह सभी बातें बच्चों को सिखाना एक अच्छी पहल है। नई शिक्षा नीति भी यही कहती है।

पुलिस विभाग करेगा स्कूल शिक्षा विभाग का सहयोग

प्रदेश के 5वीं से 12वीं तक के करीब 90 लाख छात्र-छात्राओं को ट्रैफिक नियमों की शिक्षा दी जाएगी। इस योजना का संचालन पुलिस प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (पीटीआरआई) द्वारा किया जाएगा। योजना का उद्देश्य बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना और उनकी भागीदारी के जरिए समाज में ट्रैफिक नियमों के पालन को बढ़ावा देना है। इस योजना को स्कूल शिक्षा विभाग से स्वीकृति मिल गई है। पीटीआरआई और स्कूल शिक्षा विभाग मिलकर इसे सुचारु रूप से लागू करेंगे।

अब 14 दिसंबर को दिल्ली कूच करेंगे 101 किसान

चंडीगढ़ (एजेंसी)। शंभू बॉर्डर पर प्रदर्शन कर रहे किसानों ने 14 दिसंबर को दिल्ली कूच करने का फैसला लिया है। किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह घोषणा की। किसानों का प्रदर्शन 303 दिनों से जारी है और उनका आमरण अनशन 15वें दिन में पहुंच गया है। किसान अपनी मांगों को लेकर सरकार से बातचीत करना चाहते हैं, लेकिन अभी तक सरकार की ओर से कोई संपर्क नहीं हुआ है। किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने बताया कि 14 दिसंबर को 101 किसानों का जत्था दिल्ली कूच करेगा। उन्होंने कहा कि अब हम लोग 14 दिसंबर को दिल्ली की ओर मार्च करेंगे। हमारे प्रदर्शन को 303 दिन पूरे हो चुके हैं और किसानों का आमरण अनशन भी 15वें दिन पर पहुंच गया है। हमने हमेशा बातचीत का स्वागत किया है। सरकार की ओर से किसी ने हमसे संपर्क नहीं किया। बुधवार को किसान आंदोलन की सफलता के लिए प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाएगा। किसानों की मुख्य मांग सरकार से बातचीत शुरू करने की है। वे विरोध प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तार किए गए किसानों की रिहाई भी चाहते हैं। पंढेर ने फिल्मी सितारों, गायकों और धार्मिक नेताओं से भी अपील की है कि वे प्रदर्शनकारियों का समर्थन करें और उनके आंदोलन को आगे बढ़ाने में मदद करें। उन्होंने कहा कि कल (बुधवार) हम किसान आंदोलन की सफलता के लिए प्रार्थना करेंगे। बताया कि यह प्रदर्शन किसानों के हितों से जुड़े मुद्दों को लेकर किया जा रहा है। किसान लंबे समय से अपनी मांगों को लेकर सरकार से बातचीत चाहते हैं।

शंभू बॉर्डर से रवाना होगा 101 किसानों का जत्था, सरवन सिंह पंढेर का ऐलान

आईएनएस तुशिल से नेवी की बढ़ गई समुद्री ताकत

ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज और हाई रेंज मिसाइलों से है लैस

मॉस्को (एजेंसी)। आधुनिक मल्टी-रोल स्टील्थ-गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट 'आईएनएस तुशिल' को सोमवार को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। न्यूज एजेंसी के मुताबिक यह युद्धपोत रूस के तटीय शहर कैलिनिनग्राद में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह,

एडमिरल दिनेश त्रिपाठी की मौजूदगी में भारत को डिलीवर किया गया। आईएनएस तुशिल कई उन्नत हथियारों से लैस है। इनमें ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल, सतह से हवा में मार करने वाली हाई रेंज मिसाइल और एंटी एयर क्राफ्ट गन शामिल हैं। इसके अलावा इस युद्धपोत में कंट्रोल्ड क्लोज-रेंज रैपिड फायर गन सिस्टम, सबमरीन का खात्मा करने वाले टॉरपीडो भी हैं।

यूपी के हाथरस में भीषण हादसा, 7 लोगों की मौत

मैजिक और कंटेनर की आमने-सामने हुई भिड़ंत, 11 लोग घायल

हाथरस (एजेंसी)। हाथरस में मैजिक सवारी गाड़ी और कंटेनर की आमने सामने की जबरदस्त भिड़ंत में 7 लोगों की मौत हो गई। मैजिक गाड़ी में करीब 20 लोग सवार बताए जा रहे हैं। सभी मरने वाले मैजिक के सवार बताए जाते हैं। मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनपद हाथरस में मथुरा-कासगंज हाईवे पर हुए सड़क हादसे का संज्ञान लिया। मुख्यमंत्री ने मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों एम्बुलेंस उपचार के लिए जिला अस्पताल भिजवाया है। मृतकों के शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिए गए हैं। यह हादसा मथुरा-कासगंज हाईवे पर हुआ। कोतवाली हाथरस जंक्शन क्षेत्र गांव जैतपुर के पास की घटना है। घटना के बाद सड़क पर जाम लग गया। पूरा मामला हादसे में मैजिक सवारी गाड़ी में सवार करीब 20 लोगों में से 7 लोगों की मौत हो गई। वहीं करीब 11 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

कोतवाली हाथरस जंक्शन क्षेत्र के मथुरा कासगंज मार्ग का है जहां गांव जैतपुर के पास एक सवारी से भारी मैजिक गाड़ी और कंटेनर की आमने-सामने की भीषण भिड़ंत हो गई। इस भीषण कोतवाली चंदपा के गांव कुम्हरई निवासी 20 लोग और उनके रिश्तेदार मैजिक में सवार होकर नगला इमलिया निवासी 60 वर्षीय कैंसर पीड़ित बुजुर्ग देखने के लिए जा रहे थे।

लालू यादव फिर सियासत के बड़का 'खिलाड़ी' निकले

ममता दीदी के 'कंधे पर बंदूक' रखकर चला दी कांग्रेस पर 'गोली'

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने इंडिया ब्लॉक के नेतृत्व करने की इच्छा जगजाहिर की और उनके समर्थन में गठबंधन के दिग्गज नेता सामने आ गए। पहले अखिलेश की पार्टी के नेताओं ने ममता दीदी के दावे का समर्थन किया। फिर शरद पवार ने टीएमसी सुप्रीमो को गठबंधन के नेता बनने के काबिल बताया। अब आरजेडी के संस्थापक लालू यादव ने समर्थन देकर कांग्रेस को बड़ा झटका दिया है। पत्रकारों से बातचीत में लालू यादव ने कहा कि ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन का नेतृत्व दे देना चाहिए। जब उन्हें बताया गया कि इस पर कांग्रेस को आपत्ति है तो उन्होंने कहा कि उनके कहने से कुछ नहीं होगा। अपने एक दांव से लालू यादव ने साबित कर दिया कि वह अभी भी सियासत के खेल के बड़का यानी बड़े खिलाड़ी हैं। ममता दीदी को नेता बताकर उन्होंने दूर की चाल चल दी है। इंडिया गठबंधन में कांग्रेस खुद को नेता मानती रही और अपनी शर्तों पर ही गठबंधन के सहयोगियों को डील करती रही। लोकसभा चुनाव में 99 सीटें जीतने के बाद कांग्रेस का दावा भी मजबूत हुआ। इसके बाद राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सहयोगी दलों की डिमांड की अनदेखी की। हरियाणा में आप को गठबंधन के लिए आखिरी समय तक लटकाए

रखा। झारखंड में भी पार्टी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और आरजेडी से तगड़ा मोलभाव किया। आरजेडी को छह सीटों से संतोष करना पड़ा। महाराष्ट्र में भी सीटों के बंटवारे के दौरान कांग्रेस पर प्रेशर पॉलिटिक्स करने के आरोप लगे। वहां उद्धव ठाकरे ने सीएम फेस घोषित करने की मांग की थी, जिसे कांग्रेस ने खारिज कर दिया था। लालू यादव ऐसी स्थिति आने से पहले कांग्रेस के नेतृत्व को खारिज कर दांव चल दिया। बिहार में अगले साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और लालू यादव 2020 का चुनाव भूले नहीं हैं। आरजेडी इंडिया गठबंधन का सबसे बड़ा दल है। माकपा, भाकपा, माले और कांग्रेस उसके पुराने सहयोगी हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 70 सीटों प्रत्याशी उतारे थे। राष्ट्रीय जनता दल 144 सीटों पर लड़ा था। आरजेडी 75 सीटों पर जीत गई, जबकि कांग्रेस के सिर्फ 19 विधायक ही जीत पाए थे। माले, सीपीआई, सीपीएम ने मिलकर कुल 16 सीटें जीतीं। कांग्रेस की बुरी हार के कारण महागठबंधन सरकार बनाने से चूक गया।

गरीब वोटर के घर पार्टी सहयोगियों को भी तवज्जो

- दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी की बड़ी तैयारी
- घर-घर पार्टी देगी दस्तक, एससी वोटरों पर खास फोकस

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने आम आदमी पार्टी सरकार को चुनौती देने के लिए बड़ा जनसंपर्क अभियान शुरू किया है। इस अभियान का खास फोकस अनुसूचित जाति (एससी) के लिए आरक्षित 12 सीटों और झुग्गी-झोपड़ी वाले इलाकों पर है। पार्टी कार्यकर्ता झुग्गी-झोपड़ियों में घर-घर जाकर संपर्क करेंगे। 2020 में एएपी ने एससी के लिए आरक्षित सभी 12 सीटें जीती थीं और इन इलाकों में उसकी पकड़ मजबूत मानी जाती है। बीजेपी अब एएपी के इस गढ़ में सेंध लगाना चाहती है। इसलिए यह व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम शुरू किया गया है। बीजेपी के नेता इन इलाकों में खूब दौरा करेंगे और वोटरों को समझाने की कोशिश करेंगे कि आम आदमी पार्टी सरकार ने वादे पूरे नहीं करके उनके साथ धोखा किया है। जनसंपर्क अभियान का पहला चरण इस हफ्ते के आखिर तक पूरा होने का प्लान है।

बुजुर्गों का सम्मान, हमारी महान संस्कृति की धरोहर: राज्यपाल

राज्यपाल अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस कार्यक्रम में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों का सम्मान हमारी महान संस्कृति की धरोहर है। उनके प्रति आदर और संस्कार घर से ही विकसित होते है। उन्होंने रामायण में उल्लेखित माता-पिता और बुजुर्गों के सम्मान पर आधारित प्रसंगों का जिक्र भी किया। राज्यपाल श्री पटेल अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस के अवसर पर प्रशासनिक अकादमी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मध्यप्रदेश राज्य मानव अधिकार आयोग की विषय पर आधारित वरिष्ठ नागरिकों की देख-भाल, सुरक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी, कानूनी सुरक्षा और मानव अधिकार 'स्मारिका' का लोकार्पण भी किया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि बढ़ती उम्र के साथ बुजुर्गों को अपने खान-पान और सेहत का विशेष ध्यान रखना होता है। परिजन बुजुर्गों के प्रति हमेशा संवेदनशीलता और कृतज्ञता का भाव रखे। उन्होंने मानव अधिकारों के संरक्षण के प्रति जनजागरण के प्रयासों के लिए आयोग को साधुवाद दिया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि मानव अधिकार नैसर्गिक अधिकार है। ये अधिकार व्यक्ति का स्वाभिमान, सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करते है। इन अधिकारों तक समाज के अंतिम कड़ी के व्यक्ति की सुलभ पहुँच हो, इसकी जिम्मेदारी सरकार के साथ समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भी है। उन्होंने कहा कि राज्य मानव अधिकार आयोग की भूमिका, मानवाधिकारों के रक्षक और संरक्षक के रूप में है। आयोग वंचित और गरीब वर्ग की आशा और विश्वास के केन्द्र में है। सरकार और समाज का मार्गदर्शक भी है।

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि बुजुर्गों का सम्मान, हमारे संस्कारों और संवेदनशीलता से जुड़ा विषय है। वरिष्ठ नागरिक, हमारे परिवार और समाज के लिए धरोहर होते है, अनुभव का खजाना होते है। उन्होंने 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को आयुष्मान योजना का लाभ देने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आभार माना।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बुजुर्ग चलते-फिरते इनसाइक्लोपीडिया होते हैं। उनके पास जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं के समाधान का अनुभव है। बुजुर्ग शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, लेकिन उनका अनुभव अमूल्य है। युवाओं को चाहिए कि वे बुजुर्गों के सान्निध्य में रहें, उनके अनुभव का लाभ लें और उन्हें सम्मान दें। वरिष्ठ नागरिकों की उपस्थिति न केवल परिवार की ताकत है, बल्कि समाज की भी अमूल्य धरोहर है। उनकी सेवा और सम्मान ही हमारी संस्कृति का आधार है। यदि हम अपने मूल्यों और परंपराओं का सम्मान करेंगे, तो निश्चित रूप से विश्वगुरु बनने की दिशा में अग्रसर होंगे। वरिष्ठ नागरिकों के प्रति कृतज्ञता और आदर की भावना ही समाज की खुशहाली की सच्ची राह है।

मानव अधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री मनोहर ममतानी ने कहा कि भारतीय परिवेश में वृद्धजनों के आर्थिक, सामाजिक और वैधानिक संरक्षण किये जाने की आवश्कता है। उन्होंने कहा कि आयु एक सतत् अपरिवर्तनीय, सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जो गर्भाधान से शुरू होकर व्यक्ति की मृत्यु तक होती है। उन्होंने कहा कि वृद्धजन की महत्वपूर्ण समस्याओं में प्रमुख रूप से शारीरिक दूर्बलता, मानसिक रोग, अकेलेपन की समस्या, आर्थिक असुरक्षा, संयुक्त परिवार का अभाव, मनोंरजन की समस्याओं से बुजुर्गों को बाहर निकालने के लिए समाज को आगे आना होगा। श्री ममतानी ने कहा कि सरकार के साथ-साथ हम लोगों को भी वरिष्ठजनों के सम्मान एवं उनकी सुरक्षा के लिये कार्य करना होगा।

कार्यवाहक अध्यक्ष श्री ममतानी ने कहा कि मानव अधिकार आयोग वरिष्ठजनों संरक्षण के लिये संवेदनशीलता से कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि मानव अधिकार आयोग के संज्ञान में 1343 प्रकरण प्राप्त हुए हैं। आयोग द्वारा राज्य सरकार के माध्यम से 1228 प्रकरणों का निराकरण किया गया है। उन्होंने कहाकि आयोग द्वारा नवाचार के रूप में प्रदेश के 24 जिलों में शिविरों का आयोजन कर मानव अधिकार से संबंधित प्रकरणों का त्वरित निराकरण किया गया। श्री ममतानी ने आयोग के उद्देश्यों, कार्यों और योजनाओं पर विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

आयोग के सदस्य श्री राजीव कुमार टंडन ने स्वागत उद्बोधन दिया। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रमुख सचिव सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन की श्रीमती सोनाली पोक्षे वायंगणकर ने कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान के संचालक श्री राजेश गुप्ता ने वरिष्ठ नागरिकों के कल्याणार्थ केन्द्र और राज्य सरकार की संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

प्रशासनिक अकादमी में अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस पर आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत विशेष शिविर लगाया गया। जिसमें 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के कार्ड बनाये गये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विशेष कैम्प का अवलोकन किया और सहजता से सेवा प्रदाय करने के निर्देश दिये।

पुलिस महानिदेशक (शिकायत एवं मानव अधिकार) श्री डी.सी. सागर ने भगवान श्रीराम के पावन ग्रंथ श्री रामचरित मानस के लंका काण्ड में विजय रथ के श्लोक सुनायें। उन्होंने सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका, बल विवेक दम परहित घोरे, छमा कृपा समता रजू जोरे का उदाहरण दिया इस दोहे में बहादुरी, धैर्य, सत्य, शालीनता, दृढ़ संकल्प, शिक्त, बुद्धिमत्ता, आत्म-नियंत्रण, परोपकार, क्षमा, कृतज्ञता और समानता के 12 गुण निहित हैं जो आदर्श व्यक्ति में होते है। श्री सागर ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए पुलिस विभाग द्वारा बनाए गए सिटीजन ऐप की कार्य प्रणाली बताई।

राज्यपाल श्री पटेल का राज्य मानव अधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री ममतानी ने पौधा एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम में मानव अधिकार आयोग के पुलिस महानिरीक्षक श्री अशोक गोयल ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर नरोन्हा प्रशासनिक अकादमी के महा निदेशक श्री जे.एन. कंसोटिया, न्यायाधीशगण, वरिष्ठजन और आयोग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

मानव अधिकारों की रक्षा के प्रति जागरूक करता है विश्व मानव अधिकार दिवस : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व मानव अधिकार दिवस के असवर पर जारी अपने संदेश में कहा है कि मानव अधिकार दिवस, सम्मान, स्वाभिमान और समानता के साथ मानव अधिकारों की रक्षा के प्रति जन सामान्य को जागरूक करता है। संविधान ने जन-जन को प्रगति के अवसर प्रदान करने और उनकी गरिमा बनाए रखने के लिए सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए हैं। यह हम सब की जिम्मेदारी है कि इनका संरक्षण करते हुए देश के विकास में योगदान दें। उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष 10 दिसम्बर को विश्व मानव अधिकार दिवस मनाया जाता है।

मध्यप्रदेश के एथलीट विनोद सिंह ने 39वीं राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में रचा इतिहास

भोपाल (नप्र)। भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम में 7 से 11 दिसंबर 2024 तक आयोजित 39वीं राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में मध्यप्रदेश राज्य एथलेटिक्स अकादमी के एथलीट विनोद सिंह ने बालक अंडर-20 वर्ग के 5000 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीतकर नया इतिहास रच दिया। विनोद ने 14:12.67 मिनट के प्रदर्शन के साथ न केवल स्वर्ण पदक जीता, बल्कि नई मीट रिकॉर्ड भी बनाई।

इसी इवेंट में अकादमी के एक अन्य प्रतिभाशाली एथलीट विकास कुमार बिंद ने 14:13.52 मिनट के प्रदर्शन के साथ चौथा स्थान प्राप्त किया, जो पिछले मीट रिकॉर्ड से बेहतर था। गौरतलब है कि यह पूर्व रिकॉर्ड भी अकादमी के एथलीट सुनील डावर के नाम था, जिन्होंने 14:13.95 मिनट का समय दर्ज किया था।

इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने विनोद सिंह, विकास कुमार बिंद और उनके प्रशिक्षकों एस.के. प्रसाद एवं संदीप सिंह को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा, यह प्रदर्शन प्रदेश के खेल इतिहास में एक और सुनहरा अध्याय जोड़ता है। राज्य एथलेटिक्स अकादमी के एथलीटों की इस उपलब्धि से हमें अपार गर्व हुआ है।

मध्यप्रदेश राज्य एथलेटिक्स अकादमी निरंतर उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित कर रही है और यह सफलता न केवल एथलीटों की मेहनत का प्रमाण है, बल्कि प्रशिक्षकों की अद्वितीय तैयारी और मार्गदर्शन का भी परिणाम है।

सबके उपचार का पुख्ता प्रबन्ध

पीएम जन-मन में 7 लाख से अधिक पीवीटीजी आबादी के बने आयुष्मान कार्ड

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम जन-मन) में विशेष पिछड़ी जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के विशेष प्राथमिकता से आयुष्मान कार्ड बनाये जा रहे हैं। प्रदेश में निवासरत बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियां पीवीटीजी में आती हैं। नवम्बर 2024 के अंत तक पीवीटीजी समुदाय की कुल 7 लाख 85 हजार 324 लक्षित आबादी में से 7 लाख 969 आबादी के आयुष्मान कार्ड बनाये जा चुके हैं। लक्ष्य के विरूद्ध करीब 90 प्रतिशत सफलता हासिल कर ली गई है।

जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने बताया कि पीवीटीजी समुदाय के सभी जनजातीय बंधुओं के बड़ी तेजी से आयुष्मान कार्ड बनाये जा रहे हैं। अब तक 7 लाख से अधिक पीवीटीजी आबादी के कार्ड बनाये जा चुके हैं। इससे अब इन सबको 5 लाख रूपये तक के निःशुल्क उपचार की स्थायी सुविधा उपलब्ध हो गई है।

मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि पीएम जन-मन योजना प्रदेश के 24 पीवीटीजी बहुल जिलों में संचालित है। इन पीवीटीजी बहुल जिलों में शिवपुरी जिले में 1 लाख 33 हजार 369, श्योपुर 95 हजार 593, शहडोल 69 हजार 832, उमरिया 69 हजार 460, अशोकनगर में 49 हजार 613, गुना 44 हजार 622, मंडला 32 हजार 952, ग्वालियर 30 हजार 386, डिंडोरी 28 हजार 147, सिंगरौली 25 हजार 374, छिंदवाड़ा 24 हजार 854, विदिशा जिले में 22 हजार 140, सीधी 20 हजार 312, बालाघाट में 17 हजार 365, अनूपपुर में 16 हजार 197, दतिया 7 हजार 406, जबलपुर 5 हजार 65, सिवनी 2 हजार 215, नरसिंहपुर 2 हजार 126, मुरैना 1 हजार 625, रायसेन 1 हजार 269, कटनी में 780, भिंड में 214 तथा मैहर जिले में 53 पात्र पीवीटीजी व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड तैयार कर हितग्राहियों को वितरित भी किये जा चुके हैं।

मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि मैहर, रायसेन, कटनी एवं भिंड जिले के शत-प्रतिशत पीवीटीजी हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बना दिये गये हैं। बाकी 20 जिलों के शेष रह गये पीवीटीजी हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड भी जल्द से जल्द तैयार कर वितरित कर दिये जायेंगे। आयुष्मान भारत (निरामयम) योजना में सभी को 5 लाख रूपये तक के निःशुल्क उपचार का लाभ दिया जाता है। राज्य सरकार सभी पात्र लोगों के आयुष्मान कार्ड तैयार कर सबके निःशुल्क स्वास्थ्य उपचार की दिशा में बेहद संवेदनशील होकर इस दिशा में प्रयासरत है।

समर्थन मूल्य पर हुई 1 लाख 51 हजार 595 मीट्रिक टन धान की खरीदी

भोपाल(नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक 9 हजार 554 किसानों से 1 लाख 51 हजार 595 मीट्रिक टन धान की खरीदी उपार्जन केन्द्रों में हो चुकी है। धान की खरीदी के लिये 1245 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। धान का उपार्जन 20 जनवरी 2025 तक किया जायेगा। धान कॉमन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपये और धान ग्रेड-ए का 2320 रूपये है।

धान की खरीदी जिला सिवनी में 1262, सिंगरौली 7270, सतना 22016, मैहर 6230, रीवा 24790, मऊगंज 6355, सीधी 5318, सागर 498, कटनी 19071, पन्ना 2317, डिंडोरी 69, दमोह 1453, मंडला 12109, छिंदवाड़ा 118, नरसिंहपुर 3486, जबलपुर 585, बालाघाट 14029, नर्मदापुरम 5750, बैतूल 3344, रायसेन 600, सीहोर 989, विदिशा 30, उमरिया 647, अनूपपुर 5286 और जिला शहडोल में 7971 मीट्रिक टन की जा चुकी है।

सामंजस्य और आपसी सहयोग से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना संभव : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

ओरल कैंसर डिटेक्शन और डेंटल ट्रीटमेंट वैन का उप मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि सामंजस्य और आपसी सहयोग से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना संभव है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अपोलो सेज हॉस्पिटल परिसर में 'ओरल कैंसर डिटेक्शन और डेंटल ट्रीटमेंट वैन' सेवा का शुभारंभ किया। यह मोबाइल वैन अत्याधुनिक तकनीक और सुविधाओं से लैस है, जो मुंह के कैंसर की शीघ्र पहचान और संपूर्ण दंत चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में सक्षम है। इस पहल को डेनेशिया ग्रुप और रोटरी क्लब के सहयोग से संचालित किया जा रहा है, यह वैन विशेष रूप से उन नागरिकों की सेवा के लिए समर्पित है जो आर्थिक अथवा भौगोलिक कारणों से चिकित्सा सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। इस वैन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों और भोपाल के आस-पास के जिलों कर कैंसर एवं दंत रोगों की पहचान और उपचार की सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने डेनेशिया ग्रुप और रोटरी क्लब के सहयोग की सराहना करते हुए इसे मानवता की सेवा का अनुकरणीय उदाहरण बताया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के विजन में सामूहिक प्रयासों का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कहा कि इस वैन के संचालन से न केवल ओरल कैंसर की शीघ्र पहचान और उपचार होगा, बल्कि दंत चिकित्सा सेवाओं से भी हजारों नागरिक लाभान्वित होंगे। यह पहल समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। श्री शुक्ल ने विश्वास व्यक्त किया कि यह वैन लोगों को सुलभ और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अपोलो सेज हॉस्पिटल की सुविधाओं का अवलोकन किया।

उल्लेखनीय है कि वैन में उन्नत तकनीक से लैस ओरल कैंसर डिटेक्शन सिस्टम है, जो कुछ ही मिनटों में कैंसर की पहचान कर सकता है। इसके अतिरिक्त, वैन में एक आधुनिक डेंटल चेयर और अन्य चिकित्सा उपकरण हैं, जो जटिल से जटिल दंत समस्याओं का इलाज कर सकते हैं। वैन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बिजली न होने की स्थिति में भी पेट्रोल जनरेटर की सहायता से निर्बाध रूप से कार्य करती है। यह वैन न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है, बल्कि प्रदेश के हर कोने तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने की सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक भी है। सेज ग्रुप के चेयरमैन श्री संजीव अग्रवाल, डेनेशिया ग्रुप के चेयरमैन श्री पी के त्रिपाठी सहित रोटरी क्लब के प्रतिनिधि, चिकित्सा विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

उप मुख्यमंत्री ने खजुरिया सारंग में उप स्वास्थ्य केंद्र का किया भूमि पूजन

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने मंदसौर जिले में ग्राम खजुरिया सारंग में 65 लाख रुपए की लागत से निर्मित होने वाले आयुष्मान आरोग्यम मंदिर उप स्वास्थ्य केंद्र का भूमि पूजन किया। कार्यक्रम में ग्राम खजुरिया सारंग के शिक्षक, शिक्षिका एवं 10वीं कक्षा में 85 प्रतिशत लाने वाली बालिका कुमारी दिव्या पाटीदार का सम्मान किया गया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवडा ने कहा कि तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा। हम सबको साथ मिलकर काम करना है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार जनता की हर मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने का कार्य कर रही है। इसमें पीने का शुद्ध पानी, सड़क, बीमार के लिए इलाज का प्रबंध, पढ़ाई की व्यवस्था, घर, बिजली, युवाओं को रोजगार जैसी अनेक आवश्यकताओं को पूरा किया जा रहा है। यह देश हमारा परिवार है। प्रजातंत्र में जनता मालिक हैं। पहले बहुत से परिवार खुले आसमान के नीचे सोते थे, लेकिन पीएम आवास योजना के माध्यम से लाखों परिवार को पक्के आवास मिले हैं। अभी जो भी आवास से वंचित हैं, उन्हें भी पीएम आवास योजना का लाभ दिया जा रहा है। सरकार का संकल्प है कि एक भी परिवार बिना पक्के मकान के नहीं रहेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि पहले इलाज के अभाव में बहुत से लोगों की असामायिक मृत्यु हो जाती थी, लेकिन आयुष्मान कार्ड से अब हर व्यक्ति का निशुल्क 5 लाख तक का इलाज हो रहा है। यह आयुष्मान कार्ड गारंटी कार्ड हैं। प्रदेश में 70 से अधिक उम्र के व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाए जा रहे हैं। उन्होंने उपस्थित जन समूह को स्वच्छता का संदेश दिया। इस अवसर पर मंदसौर विधायक श्री विपिन जैन, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

पटवारी बोले-सिंधिया के लेटर की कोई वैल्यू नहीं

विजयपुर के मंच पर बुजुर्ग को बुलाकर सुनाई कहानी, बीजेपी को करना पड़ा बचाव

भोपाल (नप्र)। विजयपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस को जीत मिलने के बाद 8 दिसंबर को पीसीसी चीफ जीतू पटवारी विजयपुर पहुंचे। पटवारी ने विजयपुर में भाजपा प्रत्याशी रहे रामनिवास रावत, स्थानीय

प्रशासन, पुलिस पर जमकर हमले किए। पटवारी की सभा के बाद 8 दिसंबर को रात करीब 8 बजे बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा की ओर से प्रेस नोट जारी कर सिंधिया का बचाव किया गया।

लोगों को समझ नहीं आया कि जीतू ने आखिर ऐसा क्या कहा कि बीजेपी को ये कहना पड़ा कि सिंधिया परिवार जनसंघ के जमाने से जुड़ा रहा है। कांग्रेस भ्रामक खबरें प्रायोजित कर रही है। भास्कर ने इस मामले की पड़ताल की तो पता चला कि विजयपुर में कांग्रेस की सभा में आए एक बुजुर्ग ने पीसीसी चीफ जीतू पटवारी को सिंधिया द्वारा श्योपुर कलेक्टर को लिखा गया पत्र दिखाया और कहा कि मैं दिल्ली तक महाराज के पास गया उन्होंने चिट्ठी लिखी लेकिन, कुछ नहीं हुआ।

विजयपुर की सभा में आए एक बुजुर्ग को पटवारी ने मंच पर बुलाया और उनके हाथ से पत्र लेकर दिखाया और सिंधिया पर हमला बोल दिया। पटवारी के बयान के बाद रात करीब आठ बजे बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष की ओर से प्रेस नोट जारी कर सिंधिया का बचाव किया गया।

पटवारी के इस बयान पर बीजेपी को करना पड़ा खंडन- पटवारी ने विजयपुर की सभा में आए एक बुजुर्ग को मंच पर बुलाकर कहा- ये 80 साल के बुजुर्ग, जो मेरी दादा के उम्र के हैं, ये ज्योतिरादित्य सिंधिया के पास गए। उन्होंने इनकी बात सुनी। उनकी बात सुनकर उन्होंने 8 जनवरी को श्योपुर कलेक्टर को लेटर लिखा। आज 12 महीने बीत गए हैं, इनके लेटर की वैल्यू नहीं हुई। ज्योतिरादित्य सिंधिया के लेटर की वैल्यू नहीं हुई। इसका सम्मान नहीं हुआ।

धान को नई मिलो रेट, कैसे निकालें लागत, कैसे भरें पेट

किसान ने गीत में सुनाई पीड़ा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने शेयर किया वीडियो

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 2 दिसंबर से धान की सरकारी खरीदी शुरू हो गई है। धान खरीदी शुरू होते ही राइस मिलर्स ने अपने भुगतान की मांग को लेकर मीले बंद करके प्रदेश व्यापी हड़ताल शुरू कर दी थी। जैसे-तैसे सरकार से चर्चा के बाद जब राइस मिलर्स को दो सौ करोड़ की राशि भुगतान के आदेश हुए तब हड़ताल खत्म हुई।

अब धान का सही दाम नहीं मिलने को लेकर भोपाल जिले के बैरसिया के रहने वाले किसान बीएम पाल ने गीत के जरिए धान किसानों की पीड़ा व्यक्त की है। 1 मिनट 57 सेकेंड का यह वीडियो पूर्व केन्द्रीय मंत्री और कांग्रेस नेता अरुण यादव ने एक्स पर शेयर किया है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने एक्स पर लिखा भोपाल के किसान बीएम पाल ने गीत के माध्यम से किसानों को धान का उचित

दाम नहीं मिलने की पीड़ा सुनाई। भाजपा ने सरकार बनाने के लिए किसानों से धान 3100 रुपए प्रति क्विंटल खरीदने का वादा किया था, जो अभी तक पूरा नहीं किया गया है। मपी में मोहन सरकार बनने के बाद से ही कांग्रेस लगातार यह मांग कर रही है कि गेहूं के दाम 2700 रुपए प्रति क्विंटल और धान के दाम 31 रुपए प्रति क्विंटल किए जाएं। मप्र में सोयाबीन किसान लगातार 6 हजार रुपए प्रति क्विंटल एमएसपी पर खरीदी की मांग को लेकर आंदोलन कर चुके हैं।

गीत में किसान ने गाया....

धान को नई मिलो रेट रे भईया
धान को नई मिलो रेट....
कैसें निकालें लागत अपनी,
कैसें भरै जो पेट।
धान को नई मिलो रेट रे भईया
धान को नई मिलो रेट
कर्जा करकें हमने भैया
खेत में धान लगाई।
पानी में घुस-घुस कें हमने
फेंकी मंहगी दवाई,
गर्दन तोड़ा माहूं-मच्छर
पत्ता लपेटा इल्ली
फेंक-फेंक कर इतनी दवाई
हालत हो गई पतली।

नगर निगम भोपाल सार्थक कर्मचारी संघ की जोन-8 में बैठक

400 कर्मचारियों ने ली सदस्यता, अध्यक्ष ने सुनीं समस्याएं

भोपाल (नप्र)। नगर निगम भोपाल सार्थक कर्मचारी संघ जोन स्तर पर सदस्यता अभियान चला रहा है। इसी सिलसिले में मंगलवार को जोन क्रमांक-8,10 और 13 के कर्मचारियों की बैठक दानापानी ट्रांसफर स्टेशन पर आयोजित की गई, जिसमें तीनों जोन के 400 से अधिक कर्मचारियों ने संघ की सदस्यता ली। कर्मचारियों की सहमति से मोहम्मद इमरान को जोन 8, मोहम्मद नदीम को जोन 10 एवं आमिर अली को जोन 13 का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

संघ के अध्यक्ष अरविंद वेद ने तीनों जोन के कर्मचारियों की समस्याएं सुनीं और उन्हें भरोसा दिलाया कि संघ इन समस्याओं का जल्द समाधान कराएगा और लंबित मांगों को पूरा कराने को लेकर संघर्ष करेगा। इस मौके पर संघ के उपाध्यक्ष हामिद मोहम्मद खाल सहित अन्य पदाधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

संपादकीय

महाभियोग या प्रतीकात्मक विरोध

राज्यसभा में सभापति और देश के उपराष्ट्रपति जगदीश धनखड़ के खिलाफ विपक्ष द्वारा महाभियोग प्रस्ताव लाने की तैयारी व्यावहारिक से ज्यादा से प्रतीकात्मक विरोध की कोशिश लगती है। क्योंकि यह महाभियोग प्रस्ताव भी जल्दबाजी में लाया जा रहा है। राज्यसभा में सभापति के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव का यह पहला ही मौका होगा। इसके पहले राज्यसभा के उपसभापति पी. हरिवंश के खिलाफ विपक्ष ऐसा प्रस्ताव लाने की नाकाम कोशिश कर चुका है। महाभियोग प्रस्ताव पारित कराने के लिए राज्य सभा में उसके पास पर्याप्त संख्या नहीं है। जहां तक सभापति धनखड़ और विपक्ष के बीच रिश्तों का सवाल है तो यह पहले दिन से ही असहजतापूर्ण रहे हैं। धनखड़ की कार्यशैली को लेकर विपक्ष का आरोप है कि वो सदन में सिर्फ भाजपा के सभापति हैं। जिस तरह वो सदन को चला रहे हैं, वह असहनीय है और अब तो हद ही हो चुकी है। लेकिन महाभियोग प्रस्ताव ने बिखरे विपक्ष को एक होने का मौका जरूर दे दिया है। बताया जाता है कि अडानी के मुद्दे पर कांग्रेस को समर्थन न देने वाली पार्टी तृणमूल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने भी संविधान के अनुच्छेद 67 (बी) के तहत नोटिस पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। लेकिन राज्यसभा के नियमानुसार किसी भी महाभियोग प्रस्ताव की सूचना 14 दिनों के नोटिस के साथ दी जानी चाहिए। फिलहाल यह संभव नहीं दिखता, क्योंकि राज्यसभा का शीतकालीन सत्र 20 दिसंबर को समाप्त हो रहा है। यानी पर्याप्त समय भी विपक्ष के पास नहीं है। फिर भी विपक्ष अगर महाभियोग प्रस्ताव ला रहा है तो इसके पीछे सिर्फ यह संदेश देना है कि भाजपा सदन के समय को यूं ही 'बर्बाद' नहीं कर सकती। विपक्ष इसके खिलाफ प्रतीकात्मक विरोध दर्ज करा रहा है और विपक्षी दल संसदीय परंपरा और लोकतंत्र को बचाने के लिए लड़ रहे हैं। पारित होने की संभावना नहीं होने के बाद भी विपक्षी नेताओं का कहना है कि महाभियोग प्रस्ताव का नोटिस जल्द ही दिया जाएगा। जहां तक राज्यसभा में संख्या बल की बात है तो सदन में वर्तमान में इंडिया गठबंधन के पास 103 सदस्य हैं और उन्हें स्वतंत्र सांसद कपिल सिब्बल का भी समर्थन है। लेकिन यह संख्या पर्याप्त नहीं है। कम से कम 125 सांसदों के हस्ताक्षर ऐसी नोटिस पर होना चाहिए। जबकि सत्तारूढ़ एनडीए के पास 125 सांसदों का बहुमत है। हाल ही में सांसद अभिषेक मनु सिंघवी की सीट पर कैश पाये जाने की घटना के बाद विपक्ष ज्यादा उत्तेजित है। दरअसल, सभापति धनखड़ ने सिंघवी का नाम लेकर कहा था कि उनकी सीट पर नकद राशि पाई गई थी। जबकि ऐसे मामलों में विपक्ष का कहना है कि सभापति को पहले मामले की जांच करानी चाहिए थी, सीसीटीवी फुटेज मौजूद हैं। लेकिन उन्होंने सीधे सांसद का नाम लेकर घटना की जानकारी दी। विपक्ष का कहना है कि ऐसा उस सांसद का अपमान करने के इरादे से किया गया। कांग्रेस के नेतृत्व में दिये जाने वाले महाभियोग प्रस्ताव नोटिस की एक और भी वजह है। सभापति ने जॉर्ज सोरोस की फंडिंग का मामला सदन में उठाने दिया। इसका मकसद भाजपा को अपना एजेंडा पूरा करने का मौका देना था। विपक्ष का मानना है कि इस मामले में कोई दम नहीं है। कांग्रेस इस बात से ज्यादा नाराज है कि सभापति ने इस मामले को उठाने की अनुमति क्यों दी। विपक्ष का दावा है कि उसने पर्याप्त संख्या में सांसदों के हस्ताक्षर जुटा लिए हैं। हालांकि सभापति के खिलाफ अविश्वास या महाभियोग प्रस्ताव लाने का कोई उदाहरण नहीं है। लेकिन 2020 में विपक्ष ने राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया था। लेकिन वो प्रस्ताव गिर गया था।

नजरिया

अनुराग बेहार

लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सीईओ एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस चांसलर हैं। अंग्रेजी अखबार मिंट में प्रकाशित आलेख से अनुदित।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : पाइड पाइपर को आमंत्रण

शिक्षा के क्षेत्र में शाई दो तरह की भूमिकाएँ निभा सकती है - विद्यार्थियों की सहायक के रूप में, शिक्षकों की सहायक के रूप में और विद्यार्थियों के लिए शिक्षक के रूप में और साथ ही शिक्षा प्रबंधन में सहायता के लिए, जिसके बारे में हम इस आलेख में चर्चा नहीं करेंगे । कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महामानव यानी सुपर ह्यूमन बनने के स्तर पर पहुँचने से पहले भी इसका शिक्षा में उपयोग बहुत ही सावधानी से साथ किया जाना चाहिए । इसका सिद्धांत होना चाहिए कि 'शिक्षा में इसका उपयोग सबसे बाद में किया जाए (जब कोई विकल्प न रहे) और वह भी तब, जब यह सिद्ध हो जाए कि इसके उपयोग में कोई खतरा नहीं है ।' इस सिद्धांत की वकालत करने के पीछे के चार अंतर्निहित कारण हैं । इन चारों का कार्य हरेक भूमिका के लिए अलग-अलग है और यह शिक्षक और बच्चे दोनों के सीखने पर लागू होती है ।

जितना मेरी स्मृति में है, आज तक किसी भी तकनीक ने समाज में इतना उत्साह और उत्तेजना उत्पन्न नहीं की है जितनी जेन एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) ने की है। यदि यह मान भी लिया जाए कि जिन लोगों ने इसे विकसित किया है, वे इसके भविष्य को लेकर जो सोचते है, वह सब सही है और जल्दी ही एआई मनुष्य से ज्यादा बुद्धिमान हो जाएगी। मानव विकास के दर्शन शास्त्र में जाए बिना हम इस अनुमान को भी स्वीकार कर लेते हैं कि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता उन सारे व्यवहारों और क्रियाओं को भी आसानी से विकसित कर लेगी, जो हम मनुष्यों में कुछ क्षमताओं के कारण आती हैं और इसी वजह से हमें मनुष्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए समानुभूति और नैतिक आधार पर निर्णय लेने की क्षमता, जो हम मनुष्यों की क्षमता होती है। इसके आगे की चर्चा में हम इसे शाई (SHAI- सुपर ह्यूमन ए आई का संक्षिप्त रूप) कहकर संबोधित करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में शाई दो तरह की भूमिकाएँ निभा सकती है- विद्यार्थियों की सहायक के रूप में, शिक्षकों की सहायक के रूप में और विद्यार्थियों के लिए शिक्षक के रूप में और साथ ही शिक्षा प्रबंधन में सहायता के लिए, जिसके बारे में हम इस आलेख में चर्चा नहीं करेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महामानव यानी सुपर ह्यूमन बनने के स्तर पर पहुँचने से पहले भी इसका शिक्षा में उपयोग बहुत ही सावधानी से साथ किया जाना चाहिए। इसका सिद्धांत होना चाहिए कि 'शिक्षा में इसका उपयोग सबसे बाद में किया जाए (जब कोई विकल्प न रहे) और वह भी तब, जब यह सिद्ध हो जाए कि इसके उपयोग में कोई खतरा नहीं है।' इस सिद्धांत की वकालत करने के पीछे के चार अंतर्निहित कारण हैं। इन चारों का कार्य हरेक भूमिका के लिए अलग-अलग है और यह शिक्षक और बच्चे दोनों के सीखने पर लागू होती है।

सोचने-समझने की शक्ति खत्म करना: जब शाई सहायिका के रूप में काम करने लगेगी तो शिक्षक और बच्चों को सोचने की आवश्यकता नहीं रहेगी। यदि आप किसी क्षमता का इस्तेमाल करना कम या बंद कर देते हो तो इसका विकास रुक जाता है या यह क्षमता खत्म होने लगती है। जैसा कि शाई की क्षमताओं के बारे में बताया जा रहा है कि इसकी 'सोच' सहानुभूति और नैतिक निर्णय जैसी महत्वपूर्ण मानवीय क्षमताओं तक विस्तारित होगी। इसका सीधा अर्थ है कि शिक्षा में शाई का साथ मिलने से मनुष्यों में संज्ञानात्मक क्षमताओं का ही नहीं, सभी मानवीय क्षमताओं का कम होना अपरिहार्य है।

फॉर्म फेक्टर : यह तकनीक की भाषा का एक शब्द है, जो किसी वस्तु के भौतिक रूप के लिए इस्तेमाल किया जाता है जैसे- बॉक्सी, मुलायम, छोटा आदि। हमारे संपर्क में आने वाली एआई हमारे पास फोन के माध्यम से आती है जिसका फॉर्म फेक्टर अन्य सभी एआई जानलेवा रोबोट से काफी अलग है।

शिक्षा से हमारी अपेक्षाएँ और मनुष्यों के सीखने की प्रक्रियाएँ ऐसी हैं जो शिक्षा में फॉर्म फैक्टर वाले किसी फोन या कम्प्यूटर के द्वारा काम करने वाली शाई की क्षमताओं को निश्चित रूप से सीमित बना देंगी।

सीखने-सिखाने की प्रभावी प्रक्रिया में बच्चों का मन और मस्तिष्क समझना, उनका ध्यान अपनी ओर बनाए रखना और उनके सीखने की प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए उन्हें निरंतर मार्गदर्शन देना जरूरी है। चूँकि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताएँ हासिल करें तो ऐसा बच्चों को समूह में व्यवस्थित करते हुए किया जाना चाहिए, और यह सामूहिक संरचना में बाकी लोगों के साथ संवाद करते हुए ही संभव हो सकेगा।

इसका सीधा सा अर्थ है कि शाई को स्कूल के वातावरण के अनुरूप अर्थात बच्चों को समूह की संरचना में व्यवस्थित करते हुए ही काम करना होगा। किसी कम्प्यूटर बॉक्स या स्क्रीन के अंदर बंद शाई की क्षमताएँ सीमित हो जाएँगी। शिक्षा में काम करने के लिए शाई को मानवनुमा रोबोट के रूप में आना होगा। कुछ एआई विशेषज्ञ परिहास के सुर में कहते नज़र आए कि प्लम्बर का काम ही ऐसा काम है जिसे एआई के दखल से सुरक्षित माना जा सकता है क्योंकि इसके लिए उच्च बहुआयामी बुद्धिमत्ता के साथ-साथ लगभग मानव जैसा स्वरूप आवश्यक है। वे शिक्षा के पेशे को भी एआई की अंतिम सीमा के रूप में बता सकते थे - क्योंकि इसके लिए शाई को सम्पूर्ण मानव रूप में रहना आवश्यक होता है।

नियंत्रण: सामाजिक विज्ञान एजेंसी की अवधारणा की वकालत करता है मगर शाई के आ जाने से घटित होने वाली बातों के लिए नियंत्रण शब्द अहदीक मुफीद है। यदि शाई वास्तव में शाई है भी तो क्या हम इसे अभी की दुनिया में अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन और नियति पर तात्कालिक और अनंत काल तक नियंत्रण देना चाहते हैं? यह तय है कि शाई अनिवार्य रूप से हमारे जीवन पर नियंत्रण करेगा, चाहे वह हमारे शिक्षक के रूप में हो या सहायकों की आड़ में। क्या हमें इस अज्ञात, अंजान तकनीक में विश्वास की एक अपरिवर्तनीय छलांग लगानी चाहिए? याद रहे, जो शिक्षा को नियंत्रित करता है, वही हमें नियंत्रित करता है।

परिवर्धन: यह चिंता का सबसे बड़ा कारण है। तकनीक मानवीय कमज़ोरियों, व्यसनों और विकृतियों को बढ़ाती है। यह वर्ग की, राष्ट्रों के बीच की और जाति जैसी सामाजिक श्रेणियों में व्याप्त हमारी असमानताओं को और मज़बूत बनाती है। सबसे अच्छी और सबसे उपयोगी चीज़ें हमेशा अमीरों के हाथों में होती हैं, जबकि गरीबों को उन्हें साथ लेकर चलने और सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए केवल प्रतीक के रूप में ये चीज़ें उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके अलावा शाई सोशल मीडिया द्वारा परिवर्धित व्यसनों को हर दिमाग तक पहुँचने के लिए शिक्षा को प्रवेश द्वार के रूप में उपयोग करेगी।

ये सभी बातें सिर्फ़ शाई के लिए ही नहीं, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास के हर चरण के लिए सच हैं । शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का कोई भी लाभ अलग-अलग तरीके से अमीरों को ही मिलेगा, चाहे वे लोग हो या राष्ट्र और इसके अनपेक्षित परिणाम सबसे पहले और ज़्यादातर वंचित वर्ग को भुगतने होंगे और उसके बाद पूरी मानवता को। जो लोग सोचते हैं कि मैं यह सब कहकर बहुत आगे की बात कर रहा हूँ, उन्हें याद दिलाना ज़रूरी है कि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक के पुरोधाओं द्वारा क्षमता और प्रदर्शन में इन प्रगति के विषय में भविष्यवाणियाँ हैं। मैं बस इन भविष्यवाणियों के तार्किक निष्कर्ष निकाल रहा हूँ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पुरोधाओं में से नैतिक रूप से प्रतिबद्ध लोग बहुत चिंतित हैं और '(सुपर) सरेखण' से जूझ रहे हैं, यानी यह सुनिश्चित करने के प्रयास में हैं कि शाई मानव कल्याण के साथ सरेखित हो और इन आपदाओं से बचा जा सके। लेकिन इस क्षेत्र के अधिकांश लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावित कार्यप्रणाली के वक्र से निकाले जाने वाले तार्किक निष्कर्षों से कतराते हैं या जानबूझकर उन्हें छिपा रहे हैं। ऐसा उनके अपने व्यावसायिक हितों के प्रति प्रतिबद्धताओं और/या हमारे द्वारा बनाई गई प्रतिकूलताओं का विरोध करने की मानवीय क्षमता के अतिरंजित आकलन के कारण हो सकता है।

तो क्या हम शिक्षा को किसी ऐसी चीज के हाथों में सौंपना चाहते हैं जो भले ही मानव से अलग दिखाई न देती हो, भले ही वह मानव न हो लेकिन अत्यधिक शक्तिशाली हो, जो छात्रों के दिमाग को खोखला कर दे और भविष्य में हमें भी नियंत्रित करने की स्थिति में हो? वह जो असमानता और संघर्ष को बढ़ा सकता है? हमने शिक्षा से यह तो नहीं सीखा है कि सब कुछ जानते-बूझते अपने बच्चों और उनके भविष्य को हैमलिन के पाइड पाइपर को सौंप दिया जाए- है ना?

जनमत

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

मारकडवाडी बूथ के मतदाताओं ने नया रास्ता दिखाया है?

महत्वपूर्ण संविधान दिवस 26 नवंबर के दिन उच्चतम न्यायालय ने 'ईवीएम मशीन के बदले मत पत्रों' (बैलट पेपर) द्वारा मतदान की मांग के लिए डॉ के.ए. पॉल द्वारा दायर जनहित याचिका को प्रथम दृष्ट्या खारिज करते हुए कहा कि 'जब चंद्रबाबू नायडू या जगन मोहन रेड्डी हारते हैं तो वे कहते हैं कि ईवीएम से छेड़छाड़ की गई है। जीतने पर कुछ भी नहीं कहते। इसे कैसे देखा जाए? याचिकाकर्ता गैर राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. पॉल अंतरराष्ट्रीय संस्था ग्लोबल पीस के अध्यक्ष हैं, जिन्होंने लगभग 3 लाक 20 हजार अनाथों और 40 लाख विधवाओं को बचाया है। डॉ. पॉल ने कई चुनाव सुधारों के साथ बैलेट मतपत्रों के उपयोग के द्वारा चुनाव कराये जाने को लेकर उक्त याचिका दायर की थी। न्यायालय के उक्त तर्क की आगे विवेचना की जा रही हैं।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय के कथन, याचिका के विषय वस्तु, मुद्दे से अप्रासंगिक हैं। न्यायालय का यह कर्तव्य है कि उनके समक्ष जो भी विषय आए, उन पर गुण दोषों के आधार पर अपना विवेकपूर्ण निर्णय दे।

सोलापुर जिले की माळशिरस विधानसभा सीट से एमवीए (आघाडी) समर्थक राकांपा (शरद पवार) उम्मीदवार उत्तमराव जानकर ने भाजपा के राम सातपुते को 13 हजार 147 वोटों से हराया। परंतु उक्त विधानसभा का एक पोलिंग बूथ मारकडवाडी गांव से भाजपा को महाआघाडी से 160 वोट (1003-843) ज्यादा मिले। उक्त अनापेक्षित परिणाम के कारण उत्पन्न गड़बड़ी की आशंका होने से ग्रामवासियों ने ÷स्वयं के खर्चे÷ पर बैलट पेपर के माध्यम से मॉक पोलिंग (डमी वोटिंग) करने का साहसिक निर्णय लिया, जिसकी शासन को सूचना सहित दी गई। परंतु प्रशासन ने उक्त कार्रवाई को 'गैरकानूनी' बताकर, कर्फ्यू लगाकर गांव वालों की मॉक पोलिंग की प्रथम अनूठी कार्रवाई को रोक दिया। गांव वालों का गांधीजी के 'असहयोग आंदोलन' के समान यह कदम, हारने की स्थिति में ईवीएम पर ठीकरा फोड़ कर चिल्लाने वाली समस्त राजनीतिक पार्टियों को न केवल आईना दिखाता है, बल्कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए निष्पक्ष चुनाव होने के लिए यह प्रयास भविष्य में एक 'मील का पत्थर' साबित हो जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इस घटना ने राजनैतिक पार्टियों को 'बौना' करते हुए इस बात को सिद्ध कर दिया कि ऐसे जागरूक नागरिकों के रहते देश में लोकतंत्र की जड़ें निश्चित रूप से समय दर समय और मजबूत होती जाएंगी ।

चुनावी प्रक्रिया पारदर्शी दिखे भी : वास्तव में देश का लोकतंत्र स्वच्छ, निष्पक्ष व सस्ती चुनावी प्रक्रिया पर टिका हुआ है। निष्पक्ष चुनाव न केवल होने चाहिए, बल्कि होते हुए दिखना भी चाहिए। ठीक उसी प्रकार जैसा कि न्याय भी मिलते हुए दिखना चाहिए। आशा के विपरीत अनपेक्षित परिणाम आने पर ईवीएम पर शक की उंगली उठाई जाती है, तो उसे दूर करने का कार्य निर्वाचन आयोग सहित 'न्यायालय' का है। जीते गए उम्मीदवार की तरफ से उठाए गए मामले की गंभीरता को देखते हुए क्या उच्चतम न्यायालय की उक्त बेंच को स्वतः संज्ञान लेते हुए मामले की फिर से सुनवाई नहीं करनी चाहिए?

ईवीएम पर न्यायालय का रूख: 'ईवीएम' के दुरुपयोग और उसके द्वारा तथाकथित धांधली के कारण मशीन के बदले भौतिक मत पत्रों के द्वारा चुनाव किए जाने के संबंध में उच्चतम न्यायालय पहले भी इस संबंध में दायर याचिकाएं हर बार खारिज कर चुका है। बावजूद इस खारिज आदेश से आम जनता के मन में मशीन के प्रति व्यक्त की गई आशंकाओं के बादल छटे नहीं हैं, बल्कि जब जब कोई चुनाव परिणाम आते हैं, तब फिर पुनः मशीन के बदले मत पत्रों से चुनाव कराने की चर्चा तेज हो जाती है। याचिकाकर्ता से न्यायालय का यह प्रश्न कि 'पार्टियों को दिक्कत नहीं है, आपको क्यों है? ऐसे आइडिया कहां से लाते है? याचिकाकर्ता जो एक नागरिक होकर एक 'वोटर' है, उसका वोट सही गिना जा रहा है, इस आशंका को लेकर क्या उसे चुनौती देने का अधिकार नहीं है? क्या निर्दलीय मतदाता का अधिकार समाप्त हो गया है?

बेशक ईवीएम पर उंगली तभी उठाई जाती है, जब व्यक्ति या पार्टी चुनाव हार जाती है, जैसा कि उच्चतम न्यायालय की उक्त दो सदस्यीय पीठ ने उक्त आदेश पारित करते समय कहा भी है। संवैधानिक अधिकारों के लिए लड़ने वाली एडीआर जैसी कई संस्थाएं, चुनाव विश्लेषकों व व्यक्तियों द्वारा लोकसभा चुनाव परिणामों में विभिन्न अनियमितताएं, कमियां, धांधलियां सामने लाने के बावजूद इंडिया गठबंधन खासकर कांग्रेस ने कुछ ट्वीट्स व बयान जारी कर वस्तुतः इसे मुद्दा नहीं बनाया। परिणाम यह हुआ कि हरियाणा में कांग्रेस जब ओपिनियन पोल, एग्जिट पोल और मौजूदा माहौल के विपरीत बुरी तरह से हारी, तब कांग्रेस ने एकतरफ तो चुनाव परिणाम को ही अस्वीकार कर दिया। परंतु वह इन तथाकथित गड़बड़ियों को न तो ठीक तरीके से सुप्रीम कोर्ट में ले गई और न ही जनता की अदालत में गई।

उच्चतम न्यायालय की 'डांट' का शायद असर हुआ हो, स्थितियां अब बदल रही है। महाराष्ट्र में जो लोग चुनाव जीते भी हैं, उनमें से भी कुछ लोग यह कह रहे हैं कि ईवीएम में गड़बड़ी हुई है, क्योंकि उन्हें आशा से वोट कम मिले हैं। एक प्रत्याशी को उसके रहने वाले बूथ पर मात्र दो वोट मिले, जबकि उसके परिवार के चार सदस्य मतदाता हैं। कुछ उदाहरण ऐसे भी सामने आए हैं, जहां कुल वोट जितने पड़े हैं, उससे ज्यादा मतों की गिनती हुई है। नांदेड लोकसभा चुनाव में और उसी लोकसभा की समस्त विधानसभा के चुनाव में कुल जितने वोट गिरे व पार्टियों को मिले हैं, उनमें भी भारी अंतर है। दोनों परिणाम एक से न हो, यह तो संभव है। परंतु जो व्यक्ति वोट डालने जाएगा, सामान्यतया दोनों मशीनों (लोकसभा-विधानसभा) में वोट डालेगा ही। अतः वोटों की संख्या का भारी अंतर (सैकड़ों का नहीं) समझ के बाहर है। मतदाता सूची में जुलाई से नवम्बर के बीच 3.45 वोट डिलीट करना व लगभग नये 47 लाख (34 लाख आयोग के अनुसार) मतदाताओं का शामिल होना (17 लाख वोट मात्र तीन सप्ताह में बढ़ना) शंका को बढ़ाने के बावजूद चुनाव आयोग ने इसका भी जवाब दिया है। चुनाव आयोग की भिन्न-भिन्न समयों पर जारी मतदान प्रतिशत के आंकड़े में अंतर को भी विपक्ष मुद्दा बना रहा है। प्रत्येक बूथ में मत डालने की संख्या औसतन 1500 से बढ़ाकर 2000 किये जाने को भी न्यायालय में चुनौती दी गई है।

मतलब साफ है! जहां चुनाव आयोग द्वारा आरोपो के संबंध में चुप्पी या दिया गया स्पष्टीकरण संदेह दूर करने वाला नहीं है, वहीं विपक्षी आरोपों का आधार व नींव भी उतनी ही हवा हवाई है। यदि विपक्ष फार्म 17 सी व उसी बूथ के गिनती के आंकड़े में कोई अंतर स्थापित कर प्रदर्शित कर देते, तब उनके बोथरे आक्रमण में कुछ पैनापन जरूर आ सकता था।

किशोरों के भावनात्मक संतुलन और मूल्यों पर मंडराता खतरा

मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

लेखक सीनियर साइकियाट्रिस्ट एंड साइकोलॉजिकल एनालिस्ट हैं।

मैं एक मनोचिकित्सक हूँ, और एक नागरिक होने के नाते जब आज की इस दर्दनाक घटना पर विचार करता हूँ, जिसमें एक छात्र ने अपने प्राचार्य को गोली मारकर जान ले ली, तो समझ में आता है कि इसके पीछे गहरे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक कारण काम कर रहे हैं।

यह सिर्फ एक बच्चे की निजी विफलता नहीं, बल्कि उस माहौल का संकेत है जहाँ वेब सीरीज़ और सिनेमा के माध्यम से अपराध को आकर्षक रूप में पेश किया जा रहा है। इस माहौल में सही-गलत का अंतर धुंधला पड़ जाता है, और किशोर असली जीवन की कठिनाइयों से जूझने के बजाय हिंसा और अपराध को आसान रास्ता मानने लगते हैं।

बचपन में यदि सुरक्षित, समझदार और प्रेमपूर्ण माहौल नहीं मिलता, तो बच्चे अपनी भावनाओं को समझना और सँभालना नहीं सीख पाते। गुस्सा, निराशा और हताशा जैसे भाव, जब समय रहते सही मार्गदर्शन नहीं पाते, तो किशोर गलत फैसलों की ओर बढ़ सकते हैं। किशोरावस्था वैसे भी पहचान, आदर्श और सम्मान की तलाश का दौर है। ऐसे में परदे पर अपराधियों को नायक की तरह देखने से उन्हें लगता है कि हिंसा या छल-कपट से भी आगे बढ़ा जा सकता है। यदि उन्हें भावनात्मक संतुलन व मूल्य आधारित दिशा-निर्देश न मिले, तो वे इन भ्रामक छवियों को वास्तविक समझने लगते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ–जैसे अवसाद, बेचैनी, अत्यधिक क्रोध या ध्यान की कमी-यदि समय पर समझी और सुलझाई न जाएँ, तो किशोर नशे या गलत आदतों की ओर खिंच सकते हैं। नशे में सही-गलत का बोध और कमज़ोर हो जाता है, जिससे अपराध या आत्मघाती प्रवृत्तियों की आशंका बढ़ जाती है। इस स्थिति से बचने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को भावनात्मक प्रबंधन सिखाया जाए, उनका मन टटोला जाए, और उन्हें बताया जाए कि हर मुश्किल भावनाओं से निपटने के स्वस्थ तरीके मौजूद हैं।

परिवार, शिक्षक, परामर्शदाता और समुदाय के लोग मिलकर खुली बातचीत, परामर्श सत्र और मानवीय संवेदनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से उनका साथ दे सकते हैं।

यह घटना सिर्फ एक बच्चा या एक परिवार की समस्या नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक परिवेश का चित्र है। जहाँ परदे पर अपराध को चमकदार पैकेज में लपेटकर परोसा जा रहा है, वहाँ बच्चों को असली दुनिया का फर्क समझाना, उन्हें भावनात्मक रूप से मज़बूत बनाना और नैतिक मूल्यों से परिचित कराना बेहद ज़रूरी हो जाता है। इसी समग्र दृष्टिकोण से हम न केवल अपराध और हिंसा पर अंकुश लगा सकते हैं, बल्कि आत्मघाती प्रवृत्तियों को भी रोकने में कामयाब हो सकते हैं।

इस घटना से मिलने वाली पाँच सीखें

- बच्चों को भावनाओं को समझना और नियंत्रित करना सिखाना बेहद आवश्यक।
- सही-गलत की पहचान और नैतिक मूल्यों पर जोर दें।
- इस बात का बोध कराना कि परदे पर दिखाई जाने वाली हिंसा और अपराध को वे कल्पना समझें, हकीकत नहीं।
- मानसिक दबाव के लक्षण जल्दी पहचानें और समय पर सहयोग दें।
- परिवार, शिक्षकों और समुदाय के साथ खुला संवाद बनाए रखें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

अरुण अर्णव खरे

लेखक व्यंग्यकार हैं

जनरेशन-ई मुहावरे : भाषाविदों को चुनौती

बटुक जी इस समय व्यथित होने की सीमा तक चिंतित दिखाई देते हैं। उनकी चिंता की वजह न मँहगाई है और न बढ़ती सांप्रदायिकता। ग्लोबल डेमोक्रेटिक और हंगर इंडेक्स में भारत की गिरती स्थिति भी उनकी चिंता का सबब नहीं है। पूर्ण बहुमत वाली प्रदेश सरकार गिरेगी या बचेगी तथा उनका जनप्रतिनिधि कितने में बिका होगा फिलहाल इस बारे में भी वह नहीं सोच रहे हैं। ईवीएम में पड़े वोट उसी उम्मीदवार के खाते में गए हैं या नहीं, विपक्ष की इस चिंता पर भी वे चिंतन के मूड में नहीं हैं। उनकी चिंता की जद में कविताओं पर कम लाइक मिलना या इस बार भी किसी पुरस्कार की जुगाड़ न कर पाना भी नहीं है। वह चिंतित हैं तो भाषाविदों की निष्क्रियता को लेकर, उनकी बेरुखी को लेकर, उनकी अन्यमनस्कता को लेकर।

वह हमेशा से सुनते आए हैं कि साहित्य समय सापेक्ष होता है और भाषा समय के साथ समृद्ध होती जाती है, पर ये भाषाविद नाम के भाषाविद रह गए हैं, कुछ कर ही नहीं रहे हैं। हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और हमें सदियों पुराने, कौड़ी, धेले, तोला, रत्ती, टका, कोल्हू, गज, मील, गुदड़ी, दमड़ी जैसे चलन से बाहर हो चुके शब्दों वाले मुहावरे ढोना पड़ रहे हैं। जब शहर, गाँव और गली-गली स्मार्ट लोगों से अटे पड़े हैं, चिट्ठी-पत्री ई-मेल, हाट-बाजार ई-बिजनेस, खरीद-फरोख्त ई-कामर्स, सरकारी कामकाज ई-गवर्नेंस, पढ़ाई-लिखाई ई-लर्निंग, पैसों का लेन-देन ई-बैंकिंग में तब्दील हो चुका है तब ये पुराने मुहावरे कितना कष्ट देते हैं, भाषाविद समझ ही नहीं पा रहे हैं। तो क्या अब कालजयी फेसबुकी कविताओं के साथ-साथ नए ई-मुहावरे भी हमें ही गढ़ना होंगे?

ठीक है इस मीडिया ने वैसे भी हमें चहुँमुखी प्रतिभा का धनी बना दिया है, यह काम भी सही। जब हम कट-पेस्ट कर अपने खाते में तमाम उपलब्धियाँ दर्ज कर सकते हैं तो फिर मुहावरों की क्या बिसात। साहित्य तो हमारी रग-रग में हैं, नए ई-मुहावरे भी गढ़ लेंगे। आज से ही यह काम शुरु। लीजिए हाजिर हैं आज सृजित जनरेशन-ई मुहावरे और उनके भावार्थ ..

इनबॉक्स में आ : मन की बात करना।

नेकी कर रिचार्ज करा : नेकी कर दरिया में डाल का ई-संस्करण। भावार्थ - भला करो और भूल जाओ।

पहाड़ पर भी सिग्नल न मिलना : भारी विपत्ति आ जाना।

न रहेगा वाई-फाई न होगी चैट : यह 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' मुहावरे का ई-स्वरूप है जिसका मतलब समस्या को जड़ से खतम कर देना है।

लाइक दो, लाइक लो : इस नए मुहावरे का भावार्थ है 'तू मेरी पीठ खुजा, मैं तेरी खुजाऊँगा'।

छः-छः आई.डी. रखना : कई चेहरों के पीछे अपनी पहिचान छुपाना।

टैग बिना चैन नहीं : बिन बुलाए मेहमान बनना।

अकाउंट हैक होना : लुटा-पिटा महसूस करना।

पासवर्ड बता देना : आफत मोल लेना।

बटुक जी ने शाबाशी की लालसा में सारे मुहावरे अपने मित्र नौरंगी लाल को भेज दिए। नौरंगी लाल ने शाबाशी देकर उत्साहवर्द्धन क्या किया कि बटुक जी ने अगले दिन ही कुछ और मुहावरों की लिस्ट जारी कर दी। गौर फरमाइए ..

टैगियों को लाइक करना : अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना

टैगियों को अनफ्रेंड कर देना : ईंट का जवाब पत्थर से देना

लगातार टैग करना : हाथ धोकर पीछे पड़ना

हर पोस्ट में टैग करना : सिर से पानी गुजरना

अनटैग करना : टका-सा जवाब देना

ऑनलाइन न दिखना: ईद का चाँद होना

चैटिंग के दौरान डाटा खतम हो जाना : कंगाली में आटा गीला

हमेशा सिग्नल मिलना : पौ बारह होना

समूह एडमिन मोड पर रखना : जबरन हाँ बुलवाना

अनेक सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स पर सक्रिय रहना: घाट-घाट का पानी पीना

मधुबाला से इनबॉक्स में चैट का प्रस्ताव मिलना: अंधे के हाथ बटेर लगना

विपरीत लिंगी प्रोफाइल रखना : दो नावों पर पैर रखना

फीमेल फ्रेंड द्वारा ब्रो संबोधित करना: सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाना

फ्रेंडलिस्ट में मधुबालाओं की भरमार : पाँचों उँगलियाँ घी में होना

सियरा लिओन से आई रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करना : ओखली में सिर देना

बार-बार प्रोफाइल पिक्चर बदलना : गिरगिट की तरह रंग बदलना

बुजुर्गों का उम्र छुपाकर अकाउंट बनाना : सींग काटकर बछड़ों में शामिल होना

बटुक जी अब सोए हुए भाषाविदों को चुनौती दे रहे हैं कि जागो, और कुछ तरीके का काम करके दिखाओ।

गीता जयंती पर विशेष

हितानंद शर्मा

लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं।

सनातन संस्कृति की ध्वजा विश्व में फहरा रही गीता प्रेस

गीता के ईश्वरीय संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य 'गीता प्रेस गोरखपुर' द्वारा पिछले 102 वर्षों से बिना रुके पूरे श्रद्धाभाव से किया जा रहा है। भारत के घर-घर में श्रीमद्भगवत गीता और रामायण की प्रति पहुंचाने का श्रेय गीता प्रेस को ही जाता है। गीता प्रेस अब तक श्रीमद्भगवत गीता की 16 करोड़ 21 लाख प्रतियां प्रकाशित कर श्रद्धालु पाठकों तक पहुंचा चुका है। अब तक 41 करोड़ 71 लाख पुस्तकें छापकर विश्व का सबसे बड़ा प्रकाशन संस्थान होने के बाद भी आश्चर्य की बात यह है कि गीता प्रेस न तो किसी से चंदा लेता है और न ही अपने प्रकाशनों में विज्ञापन ही स्वीकार करता है। जब वर्ष 2021 में गीता प्रेस को उसके उल्लेखनीय कार्यों के लिए भारत सरकार का गरिमामय 'महात्मा गांधी शांति पुरस्कार' प्रदान किया गया तो संस्थान ने पुरस्कार को पूरे सम्मान के साथ ग्रहण किया।

धर्म स्थापना के लिए मानव इतिहास में हुए सबसे भीषण महायुद्ध के बीच भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का ज्ञान आज भी अमृत रूप में प्रवाहित हो रहा है। श्रीमद्भगवत गीता केवल अर्जुन के लिए नहीं, सनातन समाज के लिए नहीं बल्कि विश्व मानवता के शुभ के लिए ईश्वरीय संदेश है। गीता के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को जान सकता है और ईश्वरीय सत्ता का अनुभव भी कर सकता है। गीता जयंती मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी तिथि को मनाई जाती है। यह वही दिन है जब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था।

गीता के ईश्वरीय संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य 'गीता प्रेस गोरखपुर' द्वारा पिछले 102 वर्षों से बिना रुके पूरे श्रद्धाभाव से किया जा रहा है। भारत के घर-घर में श्रीमद्भगवत गीता और रामायण की प्रति पहुंचाने का श्रेय गीता प्रेस को ही जाता है। गीता प्रेस अब तक श्रीमद्भगवत गीता की 16 करोड़ 21 लाख प्रतियां प्रकाशित कर श्रद्धालु पाठकों तक पहुंचा चुका है।

अब तक 41 करोड़ 71 लाख पुस्तकें छापकर विश्व का सबसे बड़ा प्रकाशन संस्थान होने के बाद भी आश्चर्य की बात यह है कि गीता प्रेस न तो किसी से चंदा लेता है और न ही अपने प्रकाशनों में विज्ञापन ही स्वीकार करता है। जब वर्ष 2021 में गीता प्रेस को उसके उल्लेखनीय कार्यों के लिए भारत सरकार का गरिमामय 'महात्मा गांधी शांति पुरस्कार' प्रदान किया गया तो संस्थान ने पुरस्कार को पूरे सम्मान के साथ ग्रहण किया, पर इसके साथ प्रदान की जाने वाली एक करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि सरकार को वापस लौटा दी थी। इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी इस संस्थान के दर्शन के लिए आए थे। लागत मूल्य से 50 से लेकर 90 प्रतिशत तक कम कीमत पर बहुमूल्य पुस्तकें पाठकों तक पहुंचाने वाला गीता प्रेस वास्तव में सामाजिक-धार्मिक जागरण का एक आंदोलन ही है।

भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण की पावन धरा उत्तरप्रदेश का प्रवास तो पूर्व में भी होता ही रहा है किन्तु इसी वर्ष संयोग से संगठन के कार्य से मुझे गोरक्ष प्रांत यानी गोरखपुर सहित आसपास के क्षेत्रों का प्रभार सौंपा गया। ऐसे में गोरखपुर में गोरक्ष पीठ सहित एक महत्वतपूर्ण तीर्थ गीता प्रेस के दर्शन का सौभाग्य भी मिला। प्रकाशन का केंद्रीय कार्यालय गोरखपुर में ही है। हिन्दू धर्म, अध्यात्म, दर्शन सहित मानव कल्याण के अनेक विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित कर चुका गीता प्रेस आधुनिक समय का तीर्थ ही है। राजा भागीरथ के महान तप से पुण्य प्रवाहिनी मां गंगा का धरती पर अवतरण संभव हो सका था। इक्ष्वाकु वंश के राजा भागीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गंगा को धरती पर लाने का प्रण पूर्ण किया था। इसी प्रकार गीता प्रेस के संस्थापक, ब्रह्मलीन श्री जयदयालजी गोयंदका के ऐसे ही महान तप का सुफल यह प्रकाशन है। वैसे तप तुलना का विषय नहीं है किन्तु धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, भक्ति एवं मानवता के उद्धार के लिए गोयंदका जी द्वारा स्थापित गीता प्रेस आज भी पुण्य प्रवाहमयी ज्ञान सरिता है।

गीता प्रेस के आदि संपादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाईजी' के उल्लेख के बिना गीता प्रेस की चर्चा पूर्ण नहीं होगी। भाईजी वीर सावरकर के निकट के क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। अपने मौसेरे भाई जयदयालजी के अगाध गीता प्रेम एवं ज्ञान को देखते हुए भाईजी ने श्रीमद्भगवत गीता को लागत मूल्य से भी कम में जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। इस संकल्प की पूर्ति के लिए अपने एक प्रकाशन की आवश्यकता थी जो गोरखपुर में प्रारंभ हुआ। प्रचार-प्रसार से दूर एक अकिंचन सेवक और निष्काम कर्मयोगी की तरह भाईजी ने सनातन संस्कृति की मान्यताओं को घर-घर तक पहुँचाने में जो अतुलनीय योगदान दिया है, इतिहास में इसका उदाहरण मिलना कठिन है।

गीता प्रेस का मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म के सिद्धांतों को गीता, रामायण, उपनिषद, पुराणों, प्रख्यात संतों के प्रवचन एवं चरित्र-निर्माण की अन्य पुस्तकें-पत्रिकाएं प्रकाशित कर इन्हें लागत मूल्य से भी कम कीमत में समाज में पहुंचाना है। गीता प्रेस मानव जीवन के उत्थायन और सभी की भलाई के लिए प्रयासरत है। इसका उद्देश्य शांति, आनंद और मानव जाति के अंतिम उत्थान के लिए गीता में प्रतिपादित जीवन जीने की कला को बढ़ावा देना है।

संस्थान का संचालन कोलकाता के गोविंद भवन द्वारा किया जाता है। इसका प्रबंधन एक गवर्निंग काउंसिल (ट्रस्ट बोर्ड) करती है। गीता प्रेस में दिन की शुरुआत सुबह की प्रार्थना से होती है। एक व्यक्ति दिनभर घूम-घूम कर प्रत्येक कार्यकर्ता को कई बार भगवान का नाम स्मरण कराता है। गीता प्रेस के अभिलेखागार में भगवद् गीता की 100 से अधिक व्याख्याओं सहित 3,500 से अधिक पांडुलिपियां रखी हैं। गीता प्रेस के मासिक पत्रिका ग्रंथ 'कल्याण' के नए संस्करण के साथ 3000 से अधिक ऑनलाइन संग्रह उपलब्ध हैं। 4 मई 1923 को गीता प्रेस की स्थापना की गई थी तब पुस्तकें छापने का काम बोस्टन कंपनी की प्रिंटिंग प्रेस से शुरू किया गया था। पैरों से चलाई जाने वाली यह मशीन 500 रुपए में अमेरिका से मंगवाई गई थी। अब संस्थान आधुनिक संसाधनों का सदुपयोग करता है इसीलिए मैनुअल और मशीन दोनों माध्यमो से प्रकाशन का काम होता है। गीता प्रेस इन अर्थों में भी विश्व का अनूठा प्रकाशन है क्योंकि यह अपनी पुस्तकों में मात्रात्मक, व्याकरणिक, शाब्दिक अथवा तथ्यात्मक त्रुटि बताने वाले को पुरस्कृत करता है हालाँकि पुस्तकों में ऐसी त्रुटियां मिलती नहीं हैं।

बीते वर्षों में मीडिया में इस प्रकार के समाचार आए थे कि गीता प्रेस आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण बंद होने की कगार पर है किन्तु संस्थान के भ्रमण में यह भी जानने मिला कि स्थिति ऐसी नहीं है। समाज के सहयोग से गीता प्रेस 300 करोड़ रुपए वार्षिक टर्न ओवर वाला समृद्ध संस्थान है और प्रति वर्ष 17 भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। संस्थान ने अपनी पुस्तकें इंटरनेट पर ऑनलाइन भी उपलब्ध कराई हैं जहां से कोई भी इन्हें डाउनलोड कर सकता है और यह पूरी तरह निःशुल्क है।

संस्थान का कार्यालय भी दर्शनीय है। इसके भव्य प्रवेश द्वार के स्तंभ एलोरा के प्राचीन गुफा-मंदिर के स्तंभों की शैली में निर्मित हैं। वहीं अर्जुन के रथ के सारथी बन श्रीकृष्ण गीता का उपदेश दे रहे हैं। प्रवेश द्वार का शिखर दक्षिण भारत के मीनाक्षी मंदिर के शिखरका स्मरण कराता है। इस प्रवेश द्वार का उद्घाटन 29 अप्रैल, 1955 को प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने किया था। संस्थान के परिसर में लीला चित्र मंदिर (आर्ट गैलरी) में 684 सुंदर चित्रों में भगवान राम और भगवान कृष्ण की लीलाओं को प्रदर्शित किया गया है। ये अलग-अलग समय के महान कलाकारों की कृतियां हैं। इनके अलावा अन्य पेंटिंग भी प्रदर्शित हैं। श्री कृष्ण लीला को दर्शाने वाली पुरानी मेवाड़ी शैली की 92 पेंटिंग दर्शनीय है। दीवारों पर संगमरमर के ब्लॉकों पर पूरी गीता उकेरी गई है, साथ ही लगभग 700 दोहे और संतों के छंद भी हैं।

गीता प्रेस आधुनिक समय में हिन्दू धर्म, संस्कृति की पताका पूरे विश्व में फहरा रही है। जब भी बात हिन्दू धर्म के महान ग्रंथों की होती है तो सहज ही गीता प्रेस का नाम ध्यान में आ जाता है। आज की घोर व्यावसायिकता के युग में गीता प्रेस लोक कल्याण की भावना से प्रामाणिक पुस्तकें समाज को उपलब्ध करा रहा है। गीता प्रेस की यह पुण्य सलिला निरंतर प्रवाहमान रहने वाली है।

गीता जयंती पर विशेष

डॉ. जीवन एस रजक

लेखक राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी एवं साहित्यकार हैं।

सर्वशास्त्रमयी गीता : हिन्दू नहीं मानव धर्म का ग्रंथ

श्रीमद्भगवद्गीता धर्म, कर्म, नीति और दर्शन की दृष्टि से भारत का ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। यह सत्य है कि गीता सनातन हिन्दूधर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ है, किन्तु गीता का संदेश सार्वभौमिक है। इसके उपदेश किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण मानवजाति के लिए कल्याणकारी है।

वास्तव में गीता हिन्दू धर्म का ही नहीं मानव धर्म का ग्रंथ है। मानव धर्म, मानव के आचरण पर नियंत्रण रखता है, साथ ही उसका नियमन और परिचालन भी करता है। गीता में मानव जीवन से संबंधित जटिल से जटिल समस्याओं का विवेचन और शाश्वत समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसमें ऐसी समस्याओं का प्रस्तुतिकरण किया गया है, जिनका संबंध धर्म, व्यक्ति, जाति या देशकाल से नहीं है। अतः गीता का महत्व सार्वभौमिक है। मनुष्य के जीवन में जितना महत्व समस्याओं का नहीं है, उससे अधिक महत्व समस्याओं के निराकरण की विधियों का है। एक नैतिक ग्रंथ होने के नाते गीता इस अर्थ में अत्यंत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन करती है और मानव आचरण से संबंधित समस्याओं के निराकरण और न्यायपूर्ण जीवन को प्रेरणा देती है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, नैतिकता आदि मानव जीवन का मूल आधार और भगवद्गीता इन सब का कोष है। इसलिए संपूर्ण मानव जाति के लिए गीता का संबंध जीवन, आचार, धर्म, अध्यात्म और दर्शन से है।

गीता आचरण में कर्तव्य-अकर्तव्य की समस्या का निदान खोजती है। कभी-कभी जीवन में ऐसी विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनमें यह समझ नहीं आता कि क्या करें और क्या न करें? ऐसी ही विकट स्थितियों में श्रीमद्भगवत्गीता मानव जाति का मार्गदर्शन करती है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन ने जब देखा कि उसे अपने ही स्वजनों से युद्ध करना है, तो युद्ध के भयावह परिणामों के बारे में सोचकर उसका हृदय निराशा, दुःख, मोह और संताप से व्याकुल हो गया। ऐसी स्थिति में अर्जुन ने कहा कि वह भिक्षा मांग कर जीवन यापन कर लेगा किन्तु युद्ध करके अपनों का वध नहीं करेगा। तब किंकर्तव्यविमूढ़ता की अवस्था को प्राप्त अर्जुन का मार्गदर्शन भगवान श्रीकृष्ण करते हैं। अर्जुन और श्रीकृष्ण का संवाद ही गीता का प्रतिपाद्य विषय है। इस महत्वपूर्ण संवाद में गीता व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता के मूल सूत्रों तथा दार्शनिक मन्तव्यों की विवेचना करती है।

भारतीय धर्म शास्त्रों में गीता का महत्व सर्वोपरि है। इसमें सभी धर्म शास्त्रों का समाहार है। इसलिए गीता को 'सर्वशास्त्रमयी' कहा गया है। गीता में वेदों तथा उपनिषदों में वर्णित दार्शनिक एवं नैतिक सिद्धांत का मूल तत्व समाहित है। गीता एक समन्वयकारी धर्मशास्त्र है, इसमें सगुण-निर्गुण, आदर्श-यथार्थ, संन्यास-भोग, ज्ञान-भक्ति-कर्म, त्याग आदि का पूर्ण समन्वय स्थापित किया गया है। वास्तव में गीता ने व्यक्ति और समाज का पूर्ण समन्वय कर मानवजाति के लिए उच्च नैतिक मूल्य स्थापित किए हैं।

संभवतः गीता विश्व का एक मात्र धर्मग्रंथ है, जिसमें जीवन के परमलक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए 'कर्म' के मार्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। गीता कहती है कि अपने जीवन में कोई भी जीव एक क्षण भी बिना कर्म किए नहीं रह सकता है, उसे प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ कर्म करना ही होता है। अर्थात् यह संसार कर्म प्रधान है और कर्मों से ही मोक्ष का मार्ग सुलभ है।

गीता का 'निष्काम कर्म योग' संपूर्ण मानवजाति के आदर्श है। निष्काम कर्म अर्थात् मनुष्य का अधिकार कर्म करने पर है, फल की प्राप्ति पर उसका अधिकार नहीं है। इसलिए मनुष्य को कर्मफल की चिंता किए बिना पूरी निष्ठा से अपना कर्म करना चाहिए। कर्मों के अनुसार मनुष्य को उसके कर्मों का फल अवश्य ही मिलता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छा तथा बुरे कर्मों का फल बुरा। आज की इस आधुनिक दुनियां में मनुष्य अत्यंत स्वार्थी और धैर्यहीन हो गया है, वह कोई भी कार्य करने से पहले उसके परिणाम के बारे में सोचता है और अपेक्षानुरूप परिणाम न मिलने पर परेशान हो जाता है। दुनिया में आत्महत्या का एक मूल कारण यही है। गीता का निष्काम कर्म मानवजाति को कर्म फल से प्राप्त चिंताओं और व्यथाओं से मुक्त करता है। सोचिए, अगर मनुष्य निष्काम कर्म के मार्ग का अनुसरण कर ले तो संपूर्ण जगत में दुःख-संताप होगा ही नहीं और संपूर्ण मानव जाति सर्वदा आनंदित और चिंता-परेशानियों से मुक्त रहेगी।

गीता में कर्मों की विषद् व्याख्या की गई है। कर्म, विकर्म और अकर्म का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। अर्थात् कौन-सा कर्म करने योग्य है और कौन-सा कर्म कने योग्य नहीं है, इसे सरलता के साथ समझाया गया है। मनुष्य के सद्गुणों और दुर्गुणों, दैवीय और आसुरी स्वभाव का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया। इसके साथ ही सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों के बारे में विषद् व्याख्या श्रीमद्भगवद्गीता में की गई है। इन सब के अनुसरण से मनुष्य अपने जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयोजन पूर्ण कर सकता है।

गीता कहती है कि जब कोई मनुष्य समस्त भौतिक इच्छाओं का त्याग करके न तो इन्द्रिय तृप्ति के लिए कार्य करता है और न सकाम कर्मों में प्रवृत्त होता है, तो वह मनुष्य संन्यासी कहलाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन की सहायता से अपना उद्धार करे और अपने मन को नीचे न गिरने दे, क्योंकि जिसने मन को जीत लिया है, उसके लिए मन सर्वश्रेष्ठ मित्र है, किन्तु जो ऐसा नहीं कर पाता है उसके लिए मन सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह मन को विचलित न होने दे और शरीर, मन तथा कर्म से निरन्तर संयम का अभ्यास करे तभी उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकेगी।

वैसे तो श्रीमद्भगवद्गीता में मानव जीवन से संबंधित सभी मूल्यों और सिद्धांतों की विषद् व्याख्या की गई है, किन्तु गीता का कर्मयोग, जिसे 'निष्काम कर्म का सिद्धांत' कहते हैं, मानव जाति के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक माना जा सकता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने बार-बार अर्जुन को यही समझाया है कि जीवन में परिस्थितियाँ कितनी भी विषम क्यों न हों, मनुष्य को परिणाम की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। क्योंकि किसी भी स्थिति में मनुष्य को कर्म तो करना ही है। बिना कर्म किए मनुष्य एक क्षण भी नहीं रह सकता। यही 'निष्काम कर्मयोग' है।

भारत की सनातन परम्परा में मोक्ष प्राप्ति के लिए दो मार्गों को निर्धारित किया गया है। प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग। प्रवृत्ति मार्ग सकाम है। इसके अनुसार लौकिक तथा पारलौकिक जगत में सुख की प्राप्ति के लिए कर्म करना आवश्यक है। इसके विपरीत निवृत्ति मार्ग कर्म के त्याग और संन्यास का मार्ग है। इसके अनुसार मोक्ष की प्राप्ति के लिए संसार के कर्मों से छुटकारा आवश्यक है।

गीता में दोनों मार्गों में समन्वय स्थापित किया गया है। गीता कहती है कि कर्म आवश्यक है। कर्म बिना न तो मनुष्य का अस्तित्व रहेगा और न समाज का। इसलिए मनुष्य को कर्म अवश्य करना चाहिए, किन्तु फल की आशा नहीं करनी चाहिए। गीता कहती है कि जब मनुष्य अपने लिए नियत कर्मों को फल की आशा के बिना करता है, तो वह मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

गीता की एक बात जो सब जानते हैं, किन्तु उसे उस दृष्टि से समझने का प्रयास नहीं करते जिस उद्देश्य से वह कही गई है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि इस चराचर के कण-कण में वह स्वयं (ईश्वर) विद्यमान हैं, प्रत्येक जीव के अंदर वह विद्यमान हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो ईश्वर हम सब के भीतर है। अर्थात् वास्तव में हम कर्ता नहीं हैं। हम एक माध्यम मात्र हैं। कर्ता तो वह दिव्य शक्ति है, जो हमारे भीतर विद्यमान है, जिसे हम ईश्वर की संज्ञा देते हैं। अर्थात् हम जो कुछ भी करते हैं, वह वास्तव में हमारे भीतर बैठा हुआ ईश्वर हमसे करवा रहा है। जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से हो रहा है। सुख-दुख, अच्छा-बुरा, सफलता-असफलता सब कुछ हमारे भीतर बैठे हुए ईश्वर की इच्छा से निर्धारित होता है। कहने का मतलब यह है कि जो कुछ भी हमारे जीवन में और इस संसार में घटित हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से घटित हो रहा है, हम सब माध्यम मात्र हैं। कर्ता तो ईश्वर है। इसलिए बिना किसी आसक्ति के हमें अपने लिए नियत सभी कर्मों को पूर्ण मनोयोग से करते रहना चाहिए, शेष सब ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में कोई दुख, संताप और परेशानी नहीं होगी।

वर्तमान समय में ऐसा लगता है कि मानव जाति मानसिक रूप से बहुत कमजोर हो गई है। आज की पीढ़ी में छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या करने, झगड़ा करने, अत्यधिक तनाव और अवसाद जैसी स्थितियाँ आम बात हो गई हैं। इन सभी समस्याओं के निदान के लिए ही कदाचित गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से बार-बार कहा है कि सभी प्राणियों के भीतर मैं ही हूँ और मैं ही सब कुछ करने वाला कर्ता हूँ, यहाँ एक बात और विशेष रूप से समझना आवश्यक है। वह यह कि हम सब के भीतर ईश्वर विद्यमान हैं, अर्थात् हम कह सकते हैं कि इस ब्रह्माण्ड की 'सुपर अल्टीमेट पावर' या परम शक्ति हम सब के भीतर है। जब इतनी बड़ी शक्ति हम सब के भीतर मौजूद है, तो इस जगत में कुछ भी किया जाना असंभव नहीं है। आवश्यकता है उस पर शक्ति, उस अपरिमित ऊर्जा को जागृत करने की। वह जागृत होती है, आत्म विश्वास से और सकारात्मक चिंतन से। कहने का आषय है कि स्वयं पर विश्वास रखने और सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह से हम जीवन में वह सब कुछ हासिल कर सकते हैं, जो हम सोचते हैं। क्योंकि हमारे भीतर ईश्वर रूपी परम शक्ति विद्यमान है और जब हम आत्म विश्वास के साथ लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होते हैं, तो वह परम शक्ति हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचाने का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त करती है।

वास्तव में गीता एक सार्वभौम धर्म ग्रंथ है, इसमें मानव के जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या का सर्वश्रेष्ठ समाधान विद्यमान है। केवल श्रीमद्भगवद्गीता को सही दृष्टिकोण से पढ़ने और समझने की आवश्यकता है।

गीता महोत्सव पर विशेष

अवनीश सोमकुंवर

लेखक मध्यप्रदेश जनसंपर्क विभाग के अधिकारी हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता का वैश्विक प्रभाव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्य प्रदेश में सांस्कृतिक पुनरुद्धार और आध्यात्मिक नवजागरण के लिए अनूठे प्रयासों की श्रृंखला शुरू की है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री के निर्देश पर राज्य सरकार द्वारा 11 दिसंबर को गीता जयंती के अवसर पर सभी जिला मुख्यालयों में गीता जयंती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस विशेष अवसर पर यह जानना आवश्यक होगा कि श्रीमद् भगवद् गीता एक अनूठा आध्यात्मिक मार्गदर्शी ग्रंथ है। श्रीमद् भागवत गीता का प्रभाव पूरी दुनिया में फैल चुका है। भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य वचनों में जीवन संपूर्ण व्याख्या है। संसार की समस्याओं और मनुष्य की व्यथाओं का समाधान है। 'गीता' की महिमा का शाब्दिक वर्णन करना कठिन काम है। पाठकों के सुलभ संदर्भ के लिए श्रीमद् भगवद् गीता पर विश्व के महापुरुषों, महान वैज्ञानिकों, विद्वजनों और दार्शनिकों के विचारों का संकलन प्रस्तुत किया गया है।

'भगवान श्रीकृष्ण की कही हुई श्रीमद भगवद्गीता के समान छोटे वपु (काया, शरीर) में इतना विपुल ज्ञानपूर्ण कोई दूसरा ग्रंथ नहीं है।'

- महामना पं. मदनमोहन मालवीय

'जब कभी संदेह मुझे घेरते हैं और मेरे चेहरे पर निराशा छाने लगती है; मैं क्षितिज पर गीता रूपी एक ही उम्मीद की किरण देखता हूं। इसमें मुझे अवश्य ही एक छन्द मिल जाता है जो मुझे सांत्वना देता है। तब मैं कष्टों के बीच मुस्कुराने लगता हूँ।'

- महात्मा गांधीजी

गीता हमारे ग्रंथों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है।

- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

मशहूर जर्मन कवि, उपन्यासकार और पेंटर हरमन हेस के जीवन पर भी गीता का विशेष प्रभाव था। उनकी कालजयी रचना 'सिद्धार्थ' में यह स्पष्ट होता है। उनका कहना था 'गीता की सबसे अच्छी विशेषता यह है कि यह जीवन के सही मायनों को पूरी वास्तविकता के साथ सामने रखती है।'

उन्नीसवीं सदी के मशहूर दर्शनशास्त्री और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता अल्बर्ट श्विट्ज़र मानते थे - 'श्रीमद् भगवद्गीता मनुष्य के जीवन पर बहुत गहरा असर डालती है। यह कर्मों के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का संदेश देती है।'

स्विस मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग को विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के लिए जाना जाता है। वे न सिर्फ मनोविज्ञान बल्कि दर्शन, साहित्य और धार्मिक अध्ययन में भी विशेषज्ञता रखते थे। उनका मानना था, 'मनुष्य को उल्टे वृक्ष के रूप में प्रदर्शन की अवधारणा बहुत पहले से ही मौजूद थी जिसे बाद में सामने लाया गया। अपने वक्तव्यों में कही गई प्लेटो की वह बात कि मनुष्य सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय पौधा है, जो ब्रह्माण्ड से सींचित होता है। यह वैदिक अवधारणा है और गीता के 15वें अध्याय में इसे स्पष्ट तौर पर कहा गया है।'

उन्नीसवीं सदी के ही मशहूर अंग्रेजी साहित्यकार आल्डस हक्सले ने कहा था - 'मनुष्य में मानव मूल्यों की समझ पैदा करने के लिए गीता सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रंथ है। शाश्वत दर्शन के विषय में यह अब तक की सबसे स्पष्ट और व्यापक प्रस्तुति है। यह सिर्फ भारत के लिए नहीं है बल्कि इसका जुड़ाव पूरी मानवता से है।'

उन्नीसवीं सदी के विख्यात अमेरिकी निबंधकार और साहित्यिक हस्ती इमर्सन के जीवन पर गीता का बड़ा प्रभाव था। उनका मानना था, 'श्रीमद् भगवद्गीता के साथ मेरा दिन शानदार बीता। यह अपने तरह की पहली पुस्तक है। यह किसी और समय और परिस्थितियों में लिखी गई, लेकिन यह हमारे आज के सवालों और समस्याओं के भी जवाब पूरी स्पष्टता के साथ देती है।'

ऑस्ट्रियाई दार्शनिक और साहित्यकार रुडॉल्फ स्टीनर के जीवन को गीता ने व्यापक रूप से प्रभावित किया था। उनका मानना था कि भगवद्गीता जैसी अप्रतिम रचना को समझने के लिए बस हमें स्वयं को उसके साथ लय बिठाने की जरूरत है।'

मशहूर अमेरिकी दार्शनिक और साहित्यकार हेनरी डेविड थोरो पर गीता का प्रभाव उनके साहित्य और सामाजिक कार्यों परिलक्षित होता है। वे बताते थे, 'हर सुबह मैं अपने ज्ञान को स्वर्गीय और अप्रतिम भगवद्गीता के दर्शन से स्नान कराता हूं। इसकी तुलना में हमारा आज का साहित्य और दर्शन की समझ बेहद तुच्छ और व्यर्थ साबित होती है।'

वे कहते थे कि 'प्राचीन भारत की सभी स्मरणीय वस्तुओं में गीता से श्रेष्ठ कोई भी दूसरी वस्तु नहीं है। गीता में वर्णित ज्ञान ऐसा उत्तम व सर्वकालिक है कि जिसकी उपयोगिता कभी भी कम नहीं हो सकती।'

भारतीय मनीषियों के अलावा कई विदेशी विद्वानों ने गीता के महत्व को समझा और अपने जीवन में इसके सिद्धांतों को लागू किया। यह महान पवित्र ग्रंथ गीता का ही असर था कि ईसाई मत मानने वाले कनाडा के प्रधानमन्त्री मिस्टर पियर टूडो गीता पढ़कर भारत आये। उन्होंने कहा था कि जीवन की शाम हो जाए और देह को दफनाया जाए उससे पहले अज्ञानता को दफनाना जरूरी है।

ओपेनहाइमरः भगवद् गीता से कैसे प्रभावित हुए?

बीबीसी ने समकालीन इतिहास पर अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने परमाणु बम विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध की दिशा बदल दी थी। ओपेनहाइमर ने संस्कृत भाषा सीखी और श्रीमद्भगवद गीता को अपनी पसंदीदा पुस्तकों में से एक माना। जब द क्रिश्चियन सेंचुरी के संपादकों ने उनसे पूछा कि वे कौन सी किताबें हैं, जिन्होंने उनके दार्शनिक दृष्टिकोण को सबसे ज्यादा प्रभावित किया, तो चार्ल्स बौडेलेयर की पुस्तक 'लेस फ्लर्स डू माल' को पहला और भगवद् गीता को दूसरा स्थान मिला।

सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी ओपेनहाइमर को बर्कले में संस्कृत के प्रोफेसर आर्थर डब्ल्यू राइडर ने संस्कृत से परिचित कराया था। उसके बाद उन्हें गीता से परिचित कराया गया था। जुलाई 1945 में, न्यू मैक्सिको के रेगिस्तान में पहले परमाणु बम के विस्फोट से दो दिन पहले रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने गीता का एक श्लोक सुनाया। इतिहास बदलने वाली घटना से कुछ घंटे पहले, 'परमाणु बम के जनक' ने संस्कृत से अनुवादित एक श्लोक को पढ़कर अपना तनाव दूर किया, जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है -

'युद्ध में, जंगल में,
पहाड़ों की चोटी पर
अन्धकारमय महान सागर पर,
भालों और बाणों के बीच,
नींद में, उलझन में,
शर्म की गहराई में,
मनुष्य द्वारा पहले किये गए अच्छे कर्म ही उसकी रक्षा करते हैं।'

श्रीमद् भगवद् गीता ने पश्चिम की दुनिया को गहरे प्रभावित किया है। गीता दर्शन को जानने के बाद पश्चिम के विद्वानों ने गीता के जीवन दर्शन को अपनाने के लिए अपनी बौद्धिक ऊर्जा लगा दी। दरअसल वे किसी वैज्ञानिक उपलब्धि की खोज में नहीं थे। वे इससे भी आगे विकारों से रहित मानव मन और आत्मिक शांति की खोज में थे। इसका समाधान उन्होंने श्रीमद् भगवद् गीता में पाया। इन विद्वानों में दार्शनिक इमैन्युअल कांड (1724 - 1804), हर्डर (1744-1805) फिटश (1762-1814), हीगल (1770-1831) श्लेगल (1772-1829) शिलर (1759-1805) और गोएथे (1749-1832) मुख्य है।

फ्रेडरिक वान श्लेगल ने गीता का अनुवाद किया। जर्मन के अग्रणी विद्वान बेरन विल्हेल्म ने 1821 में संस्कृत का अध्ययन शुरू किया। गीता पढ़ने के बाद उन्होंने भगवान का आभार माना कि उन्हें लंबा जीवन दिया ताकि वे सर्वाधिक प्रेरणादायी पुस्तक को आत्मसात कर पाए। उन्होंने 1825 में अकादमी आफ सिएंस के समक्ष गीता पर अपना प्रसिद्ध व्याख्या दिया था।

वर्ष 1820 में ओ फ्रेंक विद्वान ने गीता का पहला लैटिन अनुवाद प्रकाशित किया। इसके बाद 1822 में ए डब्ल्यू वान श्लेगल ने पहली बार लैटिन में संपूर्ण अनुवाद प्रकाशित किया। सर विलियम जोन्स (1756-1794) भारत में 10 साल रहे। वे पहले अंग्रेज अधिकारी थे जिन्हें संस्कृत का संपूर्ण ज्ञान था। उन्होंने गीता, रामायण, महाभारत और संस्कृत के अन्य क्लासिकल साहित्य जैसे कालिदास का अभिज्ञान शाकुंतलम, रितुसंहार और जयदेव के 'गीत गोविंदम' से इंग्लैंड के लोगों को परिचित कराया। वे एशियाटिक सोसाइटी के पहले अध्यक्ष बने और चार्ल्स विलकिंस को संस्कृत पढ़ने बनारस भेजा। उन्होंने चार्ल्स विलकिंस द्वारा अनुवादित गीता- 'भगवद् गीता - डायलॉग ऑफ श्री कृष्णा एंड अर्जुन' का प्रकाशन कराया। इसकी भूमिका उन्होंने खुद लिखी। यह 1783 का वर्ष था।

सर एडविन अर्नाल्ड ने 1885 में गीता का अनुवाद किया जिसका शीर्षक था 'द सॉन्ग सेलेशल'। इसी को पढ़कर महात्मा गांधी ने गीता के महत्व को समझा। पश्चिम के कई महान कवि लेखक भागवत गीता से प्रेरित हुए हैं। इनमें एस टी कोलरिज, पर्सी बुशी शैली, थॉमस कार्लाइल, अमेरिकन कवि एमर्सन, रॉबर्ट ब्राउनिंग, अलफ्रेड टेनिसन, विलियम ब्लैक, टी एस इलियट और डब्ल्यू बी यीटस और भी बहुत कवि दार्शनिक हैं जिनकी एक लंबी सूची है। डॉ एस राधाकृष्णन ने गीता की व्याख्या कर स्टालिन का मन बदल दिया था। विनोबा भावे ने कहा था 'गीता प्रवचन मेरी जीवन की गाथा है और वही मेरा संदेश है'।

देशमुख आत्महत्या मामले में आरोपियों पर ईनामी राशि बढ़ाई

बैतूल। सारणी थाने के बहुचर्चित रविन्द्र देशमुख आत्महत्या कांड के फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस महानिरीक्षक नर्मदापुरम ने ईनाम की राशि बढ़ाई है। पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया की अनुशंसा पर पुलिस महानिरीक्षक नर्मदापुरम ने फरार आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करने के लिए इनाम राशि को बढ़ाकर 20 हजार प्रति आरोपी कर दिया है। पुलिस अधीक्षक बैतूल द्वारा पूर्व में प्रत्येक फरार आरोपी पर 5 हजार की इनाम राशि घोषित की गई थी। अब पुलिस महानिरीक्षक, नर्मदापुरम जोन ने पुलिस रेगुलेशन की कंडिका क्रमांक 270 और 80बी(1) के तहत इनाम राशि बढ़ाकर 20 हजार प्रति फरार आरोपी कर दी है। गौरतलब रहे कि सारणी थाना अंतर्गत बगडोना निवासी रविंद्र देशमुख द्वारा आत्महत्या करने के मामले में सारणी पुलिस ने सुसाइड नोट के आधार पर 10 आरोपियों के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध धारा 108 और 3(5) बीएनएस के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना प्रारंभ की थी। पुलिस ने इस मामले में अब तक विभिन्न स्थानों और राज्यों में दबिश देकर 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है, वहीं प्रकाश पिता केवल शिवहरे, निवासी शोभापुर कॉलोनी, रंजीत सिंह पिता सुशील सिंह निवासी बगडोना, करण सूर्यवंशी पिता धनराज सूर्यवंशी निवासी पाथाखेड़ा फरार है। फरार आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए यह इनाम राशि बढ़ाई गई है। साथ ही न्यायालय द्वारा फरार आरोपियों की संपत्ति कुर्की के लिए वारंट भी जारी किया जा चुका है। जो भी व्यक्ति फरार आरोपियों की जानकारी देगा, जिसके आधार पर गिरफ्तारी संभव हो सकेगी, उसे प्रत्येक आरोपी की गिरफ्तारी पर 20 हजार का इनाम दिया जाएगा। पुलिस अधीक्षक बैतूल ने जनता से अपील की है कि यदि इन फरार आरोपियों के संबंध में किसी को कोई भी जानकारी हो, तो तुरंत थाना सारणी या जिला बैतूल पुलिस को सूचित करें। सूचना देने वाले को इनामी राशि प्रदान की जाएगी और उनका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

नहीं बन पा रहे हैं आधार कार्ड, नागरिक परेशान

आधार कार्ड सेंटर पर लग रही लंबी कतारें

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर मुख्यालय पर इन दोनों आधार कार्ड बनवाना या उसमें सुधार करना बड़ी मुसीबत बनता जा रहा है

पंजीयन केंद्रो पर आधार बनाने वालों की लंबी-लंबी लाइन लगी हुई है और ना तो सुधार हो पा रहा है और ना नए आधार कार्ड बन पा रहे हैं। लोगों को दूर-दूर से आकर आधार केंद्रो पर घंटों खड़ा होना पड़ता है और उसके बाद भी उन्हें निराशा ही हाथ लगती है । नगर में यूं तो दर्जनों आधार पंजीयन केंद्र संचालित कीए जा रहे हैं, लेकिन लोक सेवा केंद्र और महिला बाल विकास विभाग में ही आधार कार्ड में नाम कलेक्शन का काम किया जा रहा है, जहां अत्याधिक भीड़ के कारण लोगों को घण्टों इंतजार करना पड़ रहा है। जबकि अन्य केंद्रों पर सिर्फ मोबाइल नंबर अपडेट हो पा रहे हैं। आधार कार्ड सुरधवाने आए लोगों ने बताया कि वे अपने आधार कार्ड में नाम अपडेट करने के लिए केंद्र पर पहुंचे थे, लेकिन उनके आधार कार्ड में करेक्शन नहीं हो पा रहा है। वही मुलताई नगर के तासी वार्ड निवासी सुभाष सराटकर अपनी नातन का आधार कार्ड बनवाने के लिए पिछले तीन माह से परेशान हो रहे हैं, लेकिन उसका आधार कार्ड नहीं बन पा रहा है। जिसके कारण उसे नगर पालिका से लाड़ली लक्ष्मी योजना का लाभ भी अभी तक नहीं मिल पाया है। मुलताई लोक सेवा केंद्र के मैनेजर ने बताया कि फिलहाल छोटे बच्चों के आधार कार्ड नहीं बन पा रहे है, जिसके जनवरी से शुरू होने की सम्भावना है। वहीं दूसरे केंद्रों पर मोबाइल नंबर के अलावा कोई ओर सुधार कार्य न होने के कारण लोक सेवा केंद्र में आधार अपडेट कराने वालो की भीड़ लग रही है। रोज ही सैकड़ो की संख्या में लोग अपना आधार कार्ड अपडेट कराने के लिए मुलताई पहुंच रहे हैं, लेकिन उन्हें खाली हाथ ही वापस लौटना पड़ रहा है। शासन प्रशासन को इस ओर ध्यान देना चाहिए और आधार कार्ड सेंटरों पर आ रही समस्याओं का जल्द से जल्द निदान किया जाना चाहिए।

अपर कलेक्टर ने जनसुनवाई में आए नागरिकों की सुनीं समस्याएं

बैतूल। अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई में आए नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया गया। उन्होंने अधिकारियों को जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का गंभीरतापूर्वक निराकरण किए जाने के निर्देश भी दिए। जनसुनवाई में 88 आवेदन प्राप्त हुए। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद उपस्थित थे। जनसुनवाई में बैतूल तहसील के ग्राम दीवान चारसी के ग्रामीणों ने जनसुनवाई में प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिए जाने संबंधी

आवेदन दिया। प्राप्त आवेदन पर अपर कलेक्टर श्री श्रीवास्तव ने जनपद सीईओ को प्रकरण पर आवश्यक कार्यवाही किए जाने निर्देश दिए। मुलताई जनपद पंचायत के ग्राम चिखली कला निवासी ललिता बिहारे ने संबल योजना अंतर्गत मिलने वाली अनुग्रह सहायता राशि का भुगतान नहीं होने संबंधी शिकायत की। जिस पर अपर कलेक्टर ने बताया कि भुगतान यथा शीघ्र किया जाएगा। बैतूल कोठी बाजार के गांधी वार्ड निवासी रोहित यादव ने शासकीय भूमि को अतिक्रमण मुक्त किए जाने संबंधी आवेदन दिया, जिस पर अपर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को जांच के निर्देश दिए। मुलताई तहसील के ग्राम चंदोराकला निवासी गीता बीरचंद बरोदे ने नजूल शाखा मुलताई में पट्टा रिन्यूअल कराने जनसुनवाई में आवेदन दिया। जिस पर अपर कलेक्टर ने अनुविभागीय राजस्व मुलताई को तत्काल नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए।

ठंड ने फिर पकड़ी रफ्तार, रात का तापमान 8.4 डिग्री पर पहुंचा

सुबह स्कूल जाने वाले बच्चे ठिठुर रहे, लेकिन नहीं बदली टाइमिंग

संजय द्विवेदी, बैतूल। पिछले दो दिनों से ठंड ने फिर रफ्तार पकड़ ली है। दिन भर शीतलहर चल रही है। सोमवार रात का न्यूनतम तापमान भी 8.4 डिग्री पर आ गया है, जो इस सीजन का सबसे कम तापमान दर्ज किया गया, लेकिन स्कूलों की टाइमिंग बदलने को लेकर अभी तक कोई दिशा-निर्देश जारी नहीं हुए है। अभी कुछ ही दिनों पहले जिला कलेक्टर नरेन्द्र सूर्यवंशी ने आंगनबाडियों का समय बदलकर प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक संचालन के दिए निर्देश दिये है, लेकिन स्कूलों के समय में अभी तक बदलाव नहीं किया गया है। जिससे इस कड़ाके की ठंड में बच्चों को सुबह सात बजे तैयार होकर ठिठुरते स्कूल जाना पड़ रहा है। ऐसे में ठंड बच्चों की सेहत पर विपरीत असर कर सकती है। अभिभावकों का कहना है कि रोजाना ठंड के तेवर बढ़ रहे है। बढ़ती ठंड में जहां वयस्क भी उठने से कतराते हैं, वहीं बच्चों को अलसुबह 6 बजे नहाकर तैयार होना पड़ रहा है। जिससे बच्चे बीमारी होने लगे है। ठंड से उन स्कूलों के बच्चों की ज्यादा परेशानी है, जहां दो पालियों में स्कूल लग रहे हैं वहां प्राइमरी के लिए सुबह 7 बजे से 12 टाइमिंग तय है। स्कूल समय पर पहुंचने के लिए बच्चों को सुबह 6 बजे ही उठना पड़ रहा है। बता दे कि शिक्षा विभाग हर साल ठंड में स्कूलों की टाइमिंग बढ़ाता रहा है, लेकिन इस बार अब तक इसके लिए पहल नहीं हुई। ठंड अभी और बढने की संभावना है।

टाइमिंग ऐसी कि सुबह होते ही बच्चे सड़क पर - बस और आटो से जाने वाले बच्चों को ज्यादा परेशानी हो रही है। सुबह होते ही बच्चे सडक़ पर पहुंच रहे है। कुछ निजी और सरकारी स्कूलों में कक्षाओं के संचालन का समय ऐसा है कि बच्चों को सुबह 7-8 बजे स्कूल पहुंचना ही पड़ रहा है। स्कूल पहुंचने के लिए बच्चे अलसुबह 5-6 बजे उठकर तैयार हो जाते है और बस का टाइमिंग मिलाने के लिए सड़क पर

फाइल फोटो

खड़े रहते है। एलकेजी और पहली में पढ़ने वाले बच्चों को भी इसका सामना करना पड़ रहा है। स्कूल से दूर वाले क्षेत्रों में बच्चे अलसुबह छह या साढ़े छह बजे से ही सडक़ पर आ जाते हैं। अभिभावकों का कहना है कि ठंड जिस तरह से लगातार बढ़ रही है, उसे देखते हुए टाइमिंग बदलने की जरूरत है।

एक दिन में गिरा 3.5 डिग्री तापमान- जिले में अचानक ठंड बढ़ गई है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान घटने से ठंड ने लोगों को ठिठुरने के लिए विवश कर दिया है। अधिकतम-न्यूनतम तापमान में करीब 4.2 डिग्री और 3.8 डिग्री की कमी आई है। 8 दिसंबर को रात का अधिकतम तापमान 27.5 डिग्री और न्यूनतम तापमान 12.2 डिग्री दर्ज किया गया था। जबकि 9 दिसंबर सोमवार की रात को अधिकतम तापमान 23.5 डिग्री और 8.4 डिग्री पर पहुंच गया है। तापमान में गिरावट दर्ज किये जाने से रात व सुबह, शाम ही नहीं बल्कि दिन भर ठंडी हवाएं चलने से लोग ठिठुर रहे हैं। ठंड से सबसे ज्यादा स्कूली बच्चे परेशान हो रहे है। ऊनी कपड़े पहनने के बाद भी बच्चों को ठंड से राहत नहीं मिल पा रही है। समय में बदलाव नहीं होने से मजबूरी में बच्चों को ठिठुरते हुए स्कूल जाना पड़ रहा है।

स्कूली बच्चों को ठंड से बचाने पालक कर रहे जतन- ठंड की वजह से अब अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजने में भी कतरा रहे हैं। अभिभावक शीघ्र ही सुबह लगने वाली स्कूलों का समय बदलने की मांग कर रहे हैं। हालात यह है कि अभिभावक सुबह स्कूल बस स्टॉप पर बच्चों को ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़ों में छिपते नजर आये। चिकित्सको का कहना है कि बढ़ती ठंड में बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि बच्चों की शारीरिक प्रतिरोधक शक्ति बडों के मुकाबले कम होती है। इसलिए उन पर मौसमी बीमारी बहुत जल्द हावी हो जाते है। खासकर इस मौसम में सर्दी-जुकाम, सांस लेने में तकलीफ या किसी तरह की एलर्जी की समस्या हो सकती है। इससे बचने का एकमात्र उपाय ठंड से परहेज है।

ठंड में बच्चों को बीमारियों से बचाने यह करें उपाय

खिलाएं गर्म और ताजा खाना

बच्चों के आहार पर सही तरीके से ध्यान रख कर उन्हें ठंड जनित बीमारियों से बचाना आसान है। इसलिए इस मौसम में बच्चे को बासी या फिर ठंडा खाना नहीं दें। उसे हमेशा घर का बना हुआ ताजा और गर्म खाना ही दें।

पहनाएं गर्म कपड़े

ठंड काफी बढ़ गई है। इसलिए बच्चों को गर्म कपड़े और ऊनी कपड़े पहनाएं। इससे उनका शरीर गर्म रहेगा और वो ठंड से बचे रहेंगे। दो गज की शारीरिक-दूरी का हमेशा पालन करें। मास्क और सैनिटाइजर का नियमित रूप से उपयोग करें। भीड़-भाड़ वाले जगहों से परहेज करें।

सफाई का भी रखें विशेष ध्यान

स्वच्छता हमें कई संक्रमण और मौसम जनित रोगो से बचाने में सक्षम है। कपड़े को गिला नहीं होने दें। अगर कपड़ा गीला हो जाए तो उसे तत्काल बदल दें। ऐसा करने से बच्चे बीमारी की चपेट में आने से बच जायेंगे। गीला कपड़ा पहने रहने से बच्चे सर्दी, खांसी, जुकाम या फिर अन्य कोई दूसरी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं।

इनका कहना है -

इस संबंध में फाइल तैयार करके जिला कलेक्टर से चर्चा करेंगे। आगे दिनों में ठंड की स्थिति को देखते हुए सभी शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों की टाइमिंग बढ़ाने की कार्यवाही की जावेगी।

-अनिल सिंह कुशवाहा,
जिला शिक्षा अधिकारी, बैतूल

मुख्यमंत्री जन कल्याणकारी अभियान की योजनाओं से लोगों को करें जागरूक

महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की एसडीएम ने समीक्षा की

बैतूल/आमला। एसडीएम आमला शैलेंद्र बडोनिया ने एसडीएम कार्यालय आमला में 11 दिसंबर से 26 जनवरी 2025 तक चलने वाले मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान कार्यक्रम में महिला एवं बाल विभाग की ओर से चलाए जा रही योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट पर समीक्षा बैठक की। तथा हम होंगे कामयाब पखवाड़ा से संबंधित गतिविधियों की भी समीक्षा की। समीक्षा बैठक में सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पोषण आहार, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना को और प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन करने के दिशा-निर्देश एसडीएम ने विभागीय अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम सामाजिक उत्थान का कार्य है। विभाग यह सुनिश्चित करें कि कोई भी बेटी गर्भ में ना मारी जाए। इसके लिए निरंतर निगरानी की जरूरत है। बैठक में सीडीपीओ आमला निर्मल सिंह ठाकुर ने बताया कि विभाग द्वारा कम वजन वाले बच्चों की पहचान की है और उन पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। इस अवसर पर एसडीएम श्री बडोनिया ने कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत सरकार ने अनेक कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हुई हैं, जैसे सुकन्या समृद्धि योजना, स्कूल छोड़ चुकी बालिकाओं को दोबारा स्कूल में प्रवेश दिलाना, आंगनवाडी केंद्रों के माध्यम से बेहतर पोषण आहार उपलब्ध कराना, केवल लडकियों की माताओं को सम्मानित करना, आदि के बारे में पात्र परिवारों को जागरूक करें। संस्थागत डिलीवरी पर भी फोकस रखें। गर्भवती माता के बारे में जानकारी मिलते ही संबंधित महिला का स्वास्थ्य विभाग में पंजीकरण अवश्य करवाएं। एसडीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना का लाभ प्रत्येक पात्र माता तक पहुंचना चाहिए। यह शिशु व माता के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जरूरी है। योजना के तहत आर्थिक मदद समय पर दिलवाएं और उनका सही मार्गदर्शन करें, ताकि अंतिम पात्र माता तक योजना का लाभ पहुंचे। बैठक में सभी सेक्टर की पर्यवेक्षक एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका आदि मौजूद रहे।

आज से 26 जनवरी 2025 तक चलाया जाएगा मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान : सीईओ जैन

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान की तैयारियों की समीक्षा

बैतूल। कलेक्ट्रेट सभागार में मंगलवार को आयोजित बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन ने जनकल्याण अभियान के तैयारियों की समीक्षा की। सीईओ श्री जैन ने कहा कि जिले के नगरीय निकायों के प्रत्येक वार्ड और ग्रामीण क्षेत्रों में 11 दिसंबर से 26 जनवरी तक मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया

जाएगा। अभियान के दौरान सभी विभागों के सभी पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित किया जाएगा। सभी अधिकारी विभागीय योजनाओं में शेष बचे हितग्राहियों का चिन्हांकन करके विभागीय लक्ष्य तत्काल निर्धारित कर लें। अभियान के संबंध में शासन द्वारा दिए गए निर्देशों में शामिल सभी योजनाओं में शत-प्रतिशत लक्ष्य पूर्ति अनिवार्य रूप से की जाएगी। इसके लिए नगरीय निकाय के प्रत्येक वार्ड और प्रत्येक ग्राम पंचायत में शिविर लगाए जाएंगे। प्रत्येक शिविर के लिए प्रभारी अधिकारी की ड्यूटी लगाएं। शिविर की निगरानी के लिए सेक्टर आफिसर तैनात करें। अभियान के लिए सभी विकासखण्डों तथा जिला स्तर पर कंट्रोल रूम बनाकर पूरी मॉनिटरिंग सुनिश्चित करें। बैठक में अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहें।

शिक्षा के साथ खेल जरूरी: ऋषिराज सिंह परिहार

बैतूल। कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के माय भारत पोर्टल एवं नेहरू युवा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन बालाजी इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित। कार्यक्रम एनवायके के राष्ट्रीय सदस्य

ऋषिराज सिंह परिहार, प्राचार्य वीके पाण्डे, डॉ.परेश जे शाह के आतिथ्य में और जिला युवा अधिकारी श्रीमती मोनिका चौधरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस मौके पर एनवायके मोनिका चौधरी ने बताया कि प्रतियोगिता में खो खो, रस्सा कसी,100 मीटर और 200 मीटर, दौड़ (महिला पुरुष) का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिए गए। ऋषिराज सिंह परिहार ने कहा कि शिक्षा के साथ खेलों को भी महत्व देना अति आवश्यक है। जिससे कि हम अपने मानसिक विकास व शारीरिक विकास को सुदृढ़ बना सकते हैं। वीके पांडेय ने कहा की खिलाड़ियों में अपनी प्रतिभा निखारने के लिए एनवायके ऐसे कार्यक्रमों का आयोजित करता है जो सराहनीय कार्य है। प्राचार्य डॉ. परेश जे शाह ने कहा कि जिले में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है और उन्हें एनवायके उचित मंच प्रदान कर रहा है। माय भारत की विस्तृत जानकारी से धनंजय सिंह ठाकुर द्वारा जानकारी दी गई व बताया की इन प्राचीन खेलों के माध्यम से हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन धनंजय सिंह ठाकुर द्वारा व आभार एनएसएस इकाई बालाजी कॉलेज के नीलेश मिश्रा ने व्यक्त किया। इस अवसर पर अनिरुद्ध दरूदकर, ओंकार धुर्वे, आलोक नागले, रेफरी खेल युवा कल्याण विभाग से रामनारायण शुक्ला, राधेलाल बनखेडे, अनारकली तुमडाम, छात्र-छात्राएं सहित कॉलेज स्टाफ मौजूद था।

सारणी नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष के लिए कई दावेदार मैदान में

शिवा गुप्ता एवं कुबेर डोंगरे के बीच रस्साकशी, दोनों हैं प्रबल दावेदार

बैतूल/सारणी। भारतीय जनता पार्टी द्वारा संगठन पर्व के तहत 15 दिसम्बर तक सभी 30 मण्डलों में अध्यक्ष का चुनाव होना है। इसी तारतम्य में सारणी नगर मंडल अध्यक्ष के पद को लेकर सारणी क्षेत्र में चर्चाओं का बाजार तेज हो गया है और यहां आज बुधवार को रायशुमारी भी होने वाली है। वैसे तो सारणी मंडल अध्यक्ष पद के लिए कई दावेदारों के नाम समाने आ रहे है। जिनमें कुबेर डोंगरे, शिवा गुप्ता, शिबु सिंह, नन्हे सिंह, गणेश मस्की और मुकेश यादव के नाम प्रमुखता से सामने आए हैं। इनमें भी जिला भाजपा झुग्गी झोपडी प्रकोष्ठ के

सहसंयोजक शिवा गुप्ता और सारणी नगर मंडल महामंत्री कुबेर डोंगरे का नाम प्रमुखता से सामने आ रहा है। लेकिन इन दोनों के बीच की रस्साकशी में शिवा गुप्ता आगे चलते लग रहे हैं। क्योंकि शिवा न सिर्फ शिक्षित समाजसेवी है, बल्कि मां वैष्णवी सेवा समिति के अध्यक्ष भी है। जिन्होंने अपनी जान की परवाह ना करते हुए कोविड-19 महामारी के समय में दुखी-पीड़ित लोगों की सेवा कर और उनके पास भोजन पहुँचाने का कार्य लगातार किया। उन्होंने समर्पित लोगों की अपनी एक टीम बनाई, ऐसा करके हज़ारों असहाय और ज़रूरतमंद लोगों को कोरोना के समय सुबह-शाम दोनों समय भोजन के पैकेट घर-घर पहुंचाए और लोगों को घर से बाहर नहीं आने दिया। इस तरह एक मानवतावादी मिशन के तौर पर उनका कोई भूखा न रहे अभियान की शुरूआत हुई। मां वैष्णवी सेवा समिति के माध्यम से लोगों को घर-घर जाकर दोनों समय निशुल्क बना हुआ भोजन का पैकेट असहाय निशकत, जरूरतमंदों को उपलब्ध करवाने में अहम भूमिका निभाई। इसके अलावा भी समय-समय पर शिवा गुप्ता अपनी युवा टीम के साथ सार्वजनिक कार्यक्रमो खासकर सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। उनके द्वारा सारणी-पाथाखेड़ा क्षेत्र में समय-समय पर स्वास्थ्य शिविरों का भी आयोजन किया जाता रहा है। सारणी नगर क्षेत्र के युवाओं का कहना है कि ऐसे सच्चे योग्य समाजसेवक को यदि भाजपा संगठन अपना मंडल अध्यक्ष बनाती है तो यकीनन सारणी नगर पालिका क्षेत्र में जँहा भाजपा का वर्चस्व बढ़ेगा, वंही क्षेत्र में भाजपा संगठन भी उत्तरोत्तर प्रगति करेगा।

कल बैतूल आएंगे स्वामी परमार्थदेव

शुक्रवार से आयोजित होगा पंतजलि का योग-आरोग्य शिविर

बैतूल। आगामी शुक्रवार से बैतूल के स्टेडियम में होने वाले योग शिविर के लिए पंतजलि योगपीठ हरिद्वार से स्वामी परमार्थदेव कल गुरुवार को बैतूल आएंगे। गौरतलब है कि इन दिनों चारों ओर योग की लहर है क्योंकि आगामी 13,14, 15 दिसंबर को योगऋषि स्वामी रामदेव के परम शिष्य और पतंजलि योग समिति के केंद्रीय प्रभारी डॉ. स्वामी परमार्थ देव के मार्गदर्शन में योग-आरोग्य शिविर के प्रचार- प्रसार के लिए योग साधक घर-घर तक पहुंचकर लोगों से इस शिविर का लाभ उठाने का आह्वान कर रहे हैं। जहां आयोजन समिति के सदस्य शहर में होने वाले विभिन्न योग कक्षाओं में जाकर योग साधकों को इस महाकुंभ में शामिल होने की अपील कर रहे हैं वही घर-घर जाकर भी आमंत्रण दिए जा रहे हैं। साथ ही व्हाट्सएप के माध्यम से भी लोगों को जोड़कर शिविर में आने का आह्वान किया जा रहा है। वाहन रैली निकाल कर भी लोगों के बीच योग आरोग्य को लेकर जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। प्रतिदिन ओपन ऑडिटोरियम में सुबह 5-30 से ही योग साधकों का मेला सा लग जाता है। पिछले लगभग 10 वर्षों से पतंजलि युवा भारत प्रभारी हितेश पटेल के मार्गदर्शन में संचालित इस योग कक्षा में पहले केवल पुरुष योग साधक ही शामिल होते थे लेकिन आयोजन समिति के आह्वान पर बड़ी संख्या में महिलाएं भी आकर पूरी तन्मयता से योग का लाभ उठा

रही है। धीरे-धीरे पूरे शहर में योग शिविर को लेकर खासा उत्साह नजर आ रहा है।

भारत स्वाभिमान के अध्यक्ष सुनील कुबड़े और आयोजन समिति के अध्यक्ष सुनील द्विवेदी ने बताया कि अब तक लगभग 5 हजार से अधिक लोगों ने योग के लिए पंजीयन कराया है। आयोजन बड़ा होता जा रहा है इसलिए इसकी तैयारियों को ध्यान में रखते हुए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल और नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर के साथ आयोजन समिति के सदस्यों ने विजय सेवा न्यास भवन में सोमवार को बैठक का आयोजन किया। बैठक में विधायक एवं नपा अध्यक्ष ने शिविर के लिए आवश्यक सभी व्यवस्थाओं में सहयोग का आश्वासन दिया है। मंगलवार की सर्द भरी सुबह में भी लगभग दो सौ योग साधकों ने ऑडिटोरियम में योग किया। इस योग सत्र में विधायक खंडेलवाल, नपा अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, विकास वार्ड के पार्षद आनंद प्रजापति उपस्थित रहे। विधायक ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि इस योग कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जिले के 15 विभिन्न गांव में बड़ी स्क्रीन पर किया जाएगा। जिससे जो लोग बैतूल नहीं आ सकते, वे अपनी अपनी जगह पर रहकर भी इस योग शिविर का लाभ उठा सके। उनके भाषण का सीधा प्रसारण भी आज ट्रायल के तौर पर सभी 15 गांव में किया गया। विधायक एवं नपा अध्यक्ष ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित करने का आश्वासन दिया। पहले जहां यह कार्यक्रम पतंजलि योग संस्थान का था, अब इसमें विजय सेवा न्यास बैतूल, नित्या सेवा समिति, गायत्री परिवार और ओम आयुर्वेदिक महाविद्यालय भी शामिल होकर सेवा कार्य में सहभागी बन रहे हैं। युवा भारत प्रभारी हितेश पटेल, पतंजलि किसान सेवा समिति के नवनीत वर्मा, पतंजलि योग समिति के विमल दुबे और संगठन मंत्री विनोद परिहार के अलावा समाजसेवी संजय शुक्ला पप्पी, बलराम जसूजा, रंजीत शिवहरे, हरीश गढ़ेकर, दीपक पाल ने सभी सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त करते हुए ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस शिविर में शामिल होकर योग आरोग्य का लाभ उठाने का आह्वान किया है।

पशुपालन एवं डेयरी मंत्री लखन पटेल ने कुक्कुट विकास निगम के सभागृह में विभाग की समीक्षा बैठक की।

भोपाल में स्ट्रीट डॉग्स की 1293 शिकायतें पेंडिंग

मेयर बोलीं- गार्डन की 72 शिकायत पेंडिंग, ऐसा 2 साल में कभी नहीं हुआ

भोपाल (नप्र)। भोपाल में महापौर हेल्पलाइन में सबसे ज्यादा शिकायतें स्ट्रीट डॉग्स की है। कुल 1293 शिकायतें पेंडिंग हैं। स्ट्रीट लाइट के मामले भी ज्यादा है। इन शिकायतों को लेकर मंगलवार को महापौर मालती राय ने समीक्षा की। उन्होंने कॉल करके शिकायतकर्ता से पूछा कि आपने शिकायत की थी, क्या वो दूर हो गई?

शहर में स्ट्रीट डॉग्स के शिकार के मामले हर रोज आ रहे हैं। पिछली दो घटनाओं ने झकझोर दिया। 7 दिन पहले नवजात का सिर मिला था। जिसका धड़ कुत्ते खा गए थे। यह मामला शाहजहांनाबाद थाना इलाके की वाजपेयी नगर झुग्गी बस्ती का है।

गोविंदपुरा में दो दिन पहले 5 कुत्तों ने दोपहिया सवार प्रिंटिंग प्रेस व्यवसायी कृष्ण रंजन शर्मा पर हमला कर दिया था। इन घटनाओं के बीच स्ट्रीट डॉग्स की बढ़ती शिकायतें चिंता पैदा कर रही है।

उद्यान शाखा के प्रभारी से कॉल करके चर्चा की

स्वच्छता मिशन और उद्यान शाखा के प्रभारी देवेंद्र सिंह चौहान को कॉल करके पूछा कि गार्डन की 72 शिकायतें पेंडिंग है। 2 साल में इतनी शिकायत कभी नहीं हुई। इस पर चौहान ने भी ताज्जुब जताया और मामलों को दिखवाने की बात कहीं। स्वास्थ्य यानी, साफ-सफाई की 71 शिकायतों को लेकर भी मेयर राय ने बात की।

रिटायर्ड फौजी ने पत्नी को गोली मारी, किया सुसाइड

मुरैना में दोनों बेटों पर भी तानी पिस्टल, धक्का देकर भागे बच्चे

मुरैना (नप्र)। मुरैना में रिटायर्ड फौजी ने पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी। फिर दोनों बेटों पर पिस्टल तानी। दोनों बच्चे उसे धक्का देकर भाग निकले। इसके बाद फौजी ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना शहर के विक्रम नगर में मंगलवार तड़के करीब 4 बजे की है। पुलिस और फोरेंसिक साइंस लैबोरेटरी की टीम मामले की जांच कर रही है।

पुलिस के मुताबिक, देवेंद्र पिता बलबीर सिंह (45) विक्रम नगर में अपनी पत्नी माधुरी (43), दो बेटों- सौरभ (15) और गौरव (17) के साथ रहते थे। मंगलवार तड़के देवेंद्र की किसी बात को लेकर पत्नी से हाथापाई हुई। इसके बाद उन्होंने लाइसेंसी पिस्टल से पत्नी को गोली मार दी।

पिस्टल की नोंक पर बेटों को जगाया- सीएसपी विजय भदौरिया ने कहा, प्रारंभिक जांच में पता चला है कि देवेंद्र, माधुरी और दोनों बच्चों के साथ कमरे में सोए थे। सुबह उन्होंने पिस्टल की नोंक पर बेटों को जगाया। बच्चों ने मां को अचेत देखा। उन्होंने पिता को धक्का दिया और वहां से भाग गए। इसके बाद एक और गोली चलने की आवाज आई। बच्चे वापस कमरे में आए तो पिता को जमीन पर पड़ा देखा। बच्चों ने बताया कि पिता नींद की गोलियों का प्रयोग करते थे। गोलियों की जांच भी कराई जा रही है। देवेंद्र सिंह ने पहले पत्नी की गोली मारकर हत्या की, फिर सुसाइड कर लिया।

म.प्र.में एक लाख पदों पर भर्तियां शुरू

ऊर्जा विभाग में 2573 वैकेंसी के लिए 24 दिसंबर से आवेदन; शिक्षा विभाग में 35,357 पोस्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में एक लाख पदों पर सीधी भर्ती की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसकी शुरुआत ऊर्जा विभाग ने की है। विभाग ने कर्मचारी चयन मंडल के माध्यम से तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के 2573 रिक्त पदों के लिए मंगलवार को विज्ञापन भी जारी कर दिया हैयह भर्ती पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी में की जा रही है। इसमें कैंडिडेट्स 24 दिसंबर 2024 से 23 जनवरी 2025 तक अप्लाई कर सकते हैं।

बता दें कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को कहा है कि एक लाख पदों पर भर्ती के लिए एमपीपीएससी और कर्मचारी चयन मंडल को रिक्वायरमेंट भेज दी गई है। सीएम के फैसले के तहत विभागों ने भर्ती संबंधी प्रस्ताव भेजने का काम तेज कर दिया है। जल्द ही विज्ञापन निकाले जाने की तैयारी है। शिक्षा विभाग में भी 35,357 पद भरे जाएंगे।

विभागवार 55 हजार से ज्यादा पद खाली- दूसरी ओर राज्य सरकार द्वारा विभागवार रिक्त पदों की जानकारी मांगे जाने के बाद अब तक 55 हजार 410 पदों की जानकारी सामने आ चुकी है। इन पर भर्तियों की तैयारी चल रही हैं। ऊर्जा विभाग के अपर

मुख्य सचिव नीरज मंडलोई ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के मुताबिक पदों की भर्ती के प्रस्ताव सबसे पहले भेजने और विज्ञापन जारी कराने का काम किया है।

स्कूल शिक्षा विभाग में 35,357 पद भरे जाएंगे- उधर, जीएडी में विभागों की ओर से पहुंची रिपोर्ट के अनुसार सबसे ज्यादा 24,614 पद स्कूल शिक्षा विभाग में रिक्त हैं। इसके बाद उच्च शिक्षा विभाग में 6,407 और तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास व रोजगार विभाग में 4,336 पद रिक्त हैं। वहीं, वन विभाग में भी 4,088 पद खाली हैं। मीडिया ने विभागीय अधिकारियों से बातचीत के आधार पर जुटाई है।

सीएस ने मांगी थी सभी विभागों से रिपोर्ट- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कैबिनेट बैठक में एक लाख पदों पर भर्ती के लिए फैसला लिया था। जिसके बाद मुख्य सचिव अनुराग जैन ने सभी विभागों से रिक्त पदों की जानकारी लेने के लिए बैठक बुलाई थी। वित्त विभाग ने अगले पांच सालों में सीधी भर्ती से भरे जाने वाले पदों की रूपरेखा तैयार कर ली है।

सीएम यादव ने दिसंबर माह तक भर्ती प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए हैं। इसके चलते सामान्य प्रशासन विभाग सक्रिय हो गया है। सीएम यादव स्वयं इसका रिव्यू करने वाले हैं। इसलिए सामान्य प्रशासन विभाग ने भर्ती से संबंधित जानकारी बुलाने और भर्ती प्रक्रिया को लेकर सभी विभागों से रिपोर्ट मांगने का काम तेज कर दिया है।

35 विभागों में खाली हैं पद

सरकार को अब तक जिन विभागों में पद रिक्त होने की जानकारी मिली है। उसमें 53 में से कुल 35 विभाग सामने आए हैं। ये विभाग ऐसे हैं। जहां आउटसोर्स या संविदा के पद से भर्ती करने के बजाय सीधी भर्ती से पद रिक्त पाए गए हैं। इसके अलावा दूसरे विभागों के प्रस्ताव आने के साथ भर्ती के लिए प्रस्ताव भेजने का काम शुरू कर दिया गया है।

3675 पदों पर चल रही है भर्ती प्रक्रिया, 18388 पदों पर भर्ती के प्रस्ताव

राज्य सरकार द्वारा जुटाई गई विभागवार जानकारी में यह बात सामने आई है कि वर्तमान में 3,675 पदों पर भर्ती प्रक्रिया चालू है। इसके लिए कर्मचारी चयन मंडल और मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) को जानकारी भेजी गई है। अलग-अलग विभागों ने 18,388 पदों पर भर्ती के प्रस्ताव भी भेजे हैं, जिनमें बैकलॉग और सीधी भर्ती के पद शामिल हैं। अधिकारियों के मुताबिक, सरकार ने इन पदों पर भर्ती के लिए संबंधित विभागों को यह निर्देश दिए हैं कि वे सामान्य प्रशासन विभाग के पोर्टल पर डेटा अपलोड करने के साथ एमपीपीएससी और कर्मचारी चयन मंडल को भर्ती प्रक्रिया शुरू करने के लिए विभागीय तौर पर निर्देश जारी करें।

टाइगर मूवमेंट एरिया में स्ट्रीट लाइट चालू, खतरा बढ़ा

एक्सपर्ट बोले- बाघ और इंसानों का आमना-सामना होने का डर; दो टाइगर घूम रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टाइगर मूवमेंट एरिया में नगर निगम ने स्ट्रीट लाइट चालू कर दी है। इससे बाघ और इंसानों के आमना-सामना होने का खतरा बढ़ गया है। एक्सपर्ट की मानें, तो अभी मिडोरा से कलियासोत तक दो एडल्ट टाइगर का मूवमेंट है। चंदनपुरा, कलियासोत डैम, वाल्मी के आसपास भी बाघ घूमते हैं। ऐसे में मॉर्निंग, ईवनिंग करने वालों के लिए खतरा बढ़ गया है।

बाघ मित्र राशिद नूर ने बताया, अमरनाथ कॉलोनी से चंदनपुरा के बीच और वाल्मी से बुल मदर फॉर्म के बीच स्ट्रीट लाइट चालू की गई हैं। इन्हीं इलाकों में लोग वॉक करते हैं। स्ट्रीट लाइट चालू होने से लोगों की संख्या बढ़ेगी। इससे वे बाघ मूवमेंट वाले क्षेत्र तक चले जाएंगे।

बाघ मित्र नूर के मुताबिक, जहां निगम ने लाइट चालू की है, वहां रहवासी इलाका नहीं है। वन विभाग की टीम पेट्रोलिंग भी करती है। यहां अक्सर बाघों का मूवमेंट देखने को मिल चुका है। अब लोगों को घूमने के लिए रोकना बड़ी चुनौती हो जाएगा। एमआईसी मेंबर राजेश हिंगोरानी ने कहा, लोगों की सुविधा के लिए स्ट्रीट लाइट चालू की जाती है। इस मामले में कोई आपत्ति नहीं आई है। फिर भी इसकी जानकारी ली जाएगी।

मिंडोरा-कलियासोत के आसपास दो बाघ

भोपाल के मिंडोरा से कलियासोत तक और आसपास इन दिनों दो एडल्ट बाघों का मूवमेंट बना हुआ है। इसे देखते हुए वन विभाग ने पेट्रोलिंग बढ़ा दी है और लगातार मुनादी (अनाउंसमेंट) कराई जा रही है कि जंगल तरफ कोई नहीं जाए। ग्रामीणों को सलाह दी जा रही है कि वे अपने मवेशियों को भी इस तरफ जाने न दें। मैदानी अमले का कहना है कि तकरीबन ढाई-ढाई साल के दो नर बाघ अपनी मां की सुरक्षित टेरिटरी में ही कब्जा जमाए हुए हैं।

कोई दमदार बाघ आया, तो हो सकती है फाइट

मैदानी अमले का कहना है कि वयस्क होने पर बाघ अपनी मां का इलाका छोड़ देते हैं, लेकिन ये बाघ मां की सुरक्षित टेरेटरी को छोड़कर नहीं जाना चाहते। यह चिंता का विषय है।

राजगढ़ में चोरों को पकड़ने पहुंची 3 राज्यों की पुलिस पर हमला, 8 पुलिसकर्मी घायल

पुलिस पर हुआ पथराव, राजस्थान-हरियाणा में लाखों की चोरी का केस

राजगढ़ (नप्र)। राजस्थान व हरियाणा में पिछले दिनों चोरी की वारदातों को अंजाम देने वाले आधा दर्जन आरोपितों को पकड़ने के लिए राजस्थान, हरियाणा व राजगढ़ जिले की पुलिस ने बोड़ा थाने के गांव गुलखेड़ी में दबिश दी। दबिश के दौरान ग्रामीणों ने पुलिस पर पथराव कर दिया। जिसमें अजमेर व राजगढ़ जिले के 8 पुलिसकर्मी घायल हो गए। घटना के बाद पुलिस ने 41 नामजद लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज की है।

राजस्थान-हरियाणा में लाखों रुपये की चोरी- पुलिस के मुताबिक बोड़ा थाने के गुलखेड़ी गांव के आधा दर्जन बदमाशों ने नवंबर के अंतिम सप्ताह व दिसंबर के प्रथम सप्ताह में राजस्थान के जयपुर, अजमेर, भिलवाडा व हरियाणा के भिवानी थाना क्षेत्रों में चोरी की वादातों को अंजाम दिया था। बदमाशों ने लाखों रुपये की चोरी की थी। संबंधित थानों में आरोपितों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किए गए थे।

चोरों को पकड़ने राजगढ़ पहुंची थी पुलिस- इसके बाद अजमेर, जयपुर, भिलवाड़ा व भिवानी जिले की पुलिस राजगढ़ जिले में पहुंची थी। जहां से राजगढ़ जिले की पुलिस के साथ मिलकर मंगलवार सुबह बदमाशों को पकड़ने के लिए गुलखेड़ी गांव में दबिश दी।

दबिश की भनक लगने के साथ ही ग्रामीणों ने पुलिस पर जमकर पथराव कर दिया। पथरवार के दौरान टीआई सहित 8 पुलिसकर्मी घायल हो गए। पुलिसकर्मियों के घायल होने के साथ ही दबिश देने गई पुलिस को वापस लौटना पड़ा।

8 पुलिसकर्मी हुए घायल- पथराव में जो पुलिसकर्मी घायल हुए हैं

उनमें अजमेर सिटी थाने के प्रधान आरक्षक रामनिवास व एएसआइ भीमसिंह, करनवास थाना प्रभारी रमेश जाट, पचोर थाने के सैनिक मदनलाल, करवास थाने की गायत्री, बोड़ा थाने की आरक्षक पूजा, पचोर थाने के अक्षय रघुवंशी, अजमेर, जयपुर, आरक्षक प्रदीप बोड़ा घायल हो गए।

40 लाख से अधिक की चोरी की थी- बोडा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक बदमाशों ने अजमेर, जयपुर, भिलवाड़ा व भिवानी थाना क्षेत्रों में नवंबर के अंतिम सप्ताह से लेकर दिसंबर के प्रथम सप्ताह में 40 लाख से अधिक की चोरी की घटनाओं को अंजाम दिया गया था।नयहां के बदमाशों ने संबंधित थाना क्षेत्रों में पहुंचकर चोरियां की थीं।

अलग-अलग थाना क्षेत्रों में चोरियां करने के कारण संबंधित थाना क्षेत्रों में पुलिस ने नकुल, कोईनूर वराजू नामक युवकों सहित आधा दर्जन लोगों पर प्रकरण दर्ज किए थे। उन्हीं की तलाश के लिए पुलिस मंगलवार को गांव पहुंची थी।

कहां कितने की चोरी को दिया था अंजाम

- भिवानी थाना क्षेत्र में नवंबर के अंतिम सप्ताह में 6 लाख की चोरी की
- राजस्थान के भिलवाडा थाना क्षेत्र में 25 नवंबर को 10 लाख की चोरी की घटना को अंजाम दिया।
- राजस्थान के अजमेर सिटी थाना क्षेत्र में 28 नवंबर को 7 लाख की चोरी की घटना को अंजाम दिया।
- राजस्थान के अजमेर सिटी थाना क्षेत्र में 02 दिसंबर को 3.50 लाख की चोरी की घटना को अंजाम दिया।
- राजस्थान के जयपुर थाना-2 क्षेत्र में 27 नवंबर व 2 दिसंबर को 14 लाख की चोरी को अंजाम दिया।

जबलपुर के घंसौर में घर में घुसकर महिला की हत्या

तीन बदमाशों ने किए धारदार हथियार से सात वार, सरपंच पर जमीन विवाद में मर्डर कराने का आरोप

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर से करीब 45 किलोमीटर दूर शहपुरा थाना के ग्राम घंसौर में 45 वर्षीय महिला की घर में घुसकर हत्या कर दी गई। घटना के समय महिला अपनी छोटी बहू के साथ कमरे में सो रही थी। उसका बड़ा बेटा और बहू पास वाले कमरे में थे। उसी दौरान तीन अज्ञात बदमाश आए और महिला के सिर और गले पर धारदार हथियार से ताबड़तोड़ सात वार किए। महिला की मौके पर ही मौत हो गई।

इधर, वारदात की जानकारी मिलते ही शहपुरा थाना पुलिस एफएसएल और डॉग स्क्वायड के साथ मौके पर पहुंची और अज्ञात हत्यारों की तलाश शुरू कर दी है। महिला का नाम हीरा बाई है। महिला अपने दो बेटे-बहू और पति के साथ रहती थी। घटना के समय मृतका के पति मुन्ना लाल चौधरी जबलपुर गए हुए थे।मृतका के जेठ घंसू चौधरी ने गांव के सरपंच छम्मन चौधरी पर हत्या करवाने का आरोप लगाया है।

जमीन विवाद में सरपंच पर हत्या करवाने का आरोप- मृतका के जेठ घंसू चौधरी ने गांव के सरपंच पर हत्या करवाने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि बीते कुछ सालों से दुर्गेश पटेल और उमेश पटेल से विवाद चल रहा है। इससे पहले भी दोनों कई बार उनके घर में आकर गाली-गलौज कर चुके हैं। दो साल पहले गांव के सरपंच ने मृतका की जमीन पर किसी और का मकान बनवा दिया था। आपत्ति लेने पर पूरे परिवार के साथ मारपीट की गई थी। तभी से सरपंच और हीराबाई के परिवार वालों का विवाद चले आ रहा था। हीराबाई पर पुलिस में दर्ज कराई गई शिकायत वापस लेने और राजीनामा करने का दबाव बनाया जा रहा था। एक माह पहले भी दुर्गेश पटेल से विवाद हुआ था। घंसू ने बताया कि देर रात गांव के छम्मन चौधरी, उसका लड़का, दुर्गेश पटेल और उसका भाई आए थे।

दुष्कर्म से जन्मे बच्चे को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे माता-पिता 100 रुपए के स्टाम्प पर बेचा

17 साल की नाबालिग रेप के बाद हुई थी प्रेग्नेंट

सागर (नप्र)। केंट थाना क्षेत्र में दुष्कर्म पीड़िता की डिलीवरी के बाद हुए नवजात को नाबालिग के माता-पिता ने दूसरे को दे दिया। इसके पहले कि वह नवजात को अपने साथ ले जाते, पुलिस ने प्रसूता और बच्चे को अपनी कस्टडी में ले लिया और उसे बालिका गृह में भेज दिया है।

नाबालिग के माता-पिता ने एक शपथ पत्र लिखवाकर असंवैधानिक तरीके से गोदनामा तैयार करवा लिया। इस मामले में बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने एसपी को पत्र लिखकर पूरे मामले की जांच के आदेश दिए हैं। अस्पताल में प्रसव के बाद ही नाबालिग के स्वजन बच्चे को रखने के लिए तैयार नहीं थे। हॉस्पिटल में पुलिस की उपस्थिति में ही नाबालिग के स्वजन बच्चे को किसी दूसरे को देने की बात कहने लगे थे। इसी पर बाल कल्याण समिति के सदस्यों को संदेह होने के बाद मां और बच्चे पर नजर बनाए हुए थे। इसके बाद पुलिस को पीड़िता के स्वजन द्वारा बच्चे को गोद देने की सूचना मिली, जिसके बाद वह सक्रिय हुई।

बच्चे को गैर-कानूनी तौर पर बेचने की आशंका- मामले में नाबालिग की माता द्वारा बच्चे को बेचने का भी संदेह जताया जा रहा है। दो दिन पहले केंट थाना को भी सूचना मिली कि नवजात को फर्जी व अवैधानिक प्रक्रिया के तहत दूसरे को सौंपा जा रहा है।

इसके बाद पुलिस ने बाल कल्याण समिति को सूचना दी और उनकी उपस्थिति में नाबालिग के घर जाकर उसे और नवजात को अपनी अभिरक्षा में लेकर उसे बालिका गृह में रखवा दिया।

मप्र बाल अधिकार संरक्षण आयोग अध्यक्ष रविंद्र मोरे ने सागर एसपी विकास शाहवाल को पत्र लिखकर नाबालिग से जन्मे नवजात शिशु को दूसरे को गोद देने के मामले की जांच के आदेश दिए हैं।

26 नवंबर को हुई थी डिलीवरी- 26 नवंबर की रात कोतवाली थाना क्षेत्र की निजी हॉस्पिटल में 17 साल की नाबालिग गर्भवती का प्रसव कराने का मामला सामने आने के बाद दूसरे दिन जिला बाल कल्याण समिति द्वारा हॉस्पिटल में जाकर प्रसूता और उसके नवजात बच्चे की तलाश कर पुलिस को पूरा मामला सौंपा गया था।

इसी दिन प्रसूता और उसके नवजात को डफरिन शिफ्ट कर नाबालिग के बयान के आधार पर केंट पुलिस ने सदर निवासी युवक पर दुष्कर्म का मामला कायम किया और उसे गिरफ्तार कर लिया था। वहीं डफरिन में भर्ती प्रसूता नवजात को वहां से डिस्चार्ज कर दिया गया। जहां से प्रसूता और नवजात को उसके माता-पिता अपने घर लेकर आ गए।

बच्चा गोद लेने की यह प्रक्रिया- भारत में बच्चा गोद लेने की कानूनी प्रक्रिया हिंदू दत्तक और भरण पोषण अधिनियम 1956 और किशोर न्याय (बच्चों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम 2015 के तहत पूरी की जाती है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अधीन केंद्रीय दत्तक-ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (अडाप्शन रिसोर्स अथॉरिटी) इस प्रक्रिया की देखरेख करता है। लेकिन इस प्रक्रिया को दरकिनार कर असंवैधानिक रूप से नोटरी सहित दोनों पक्षों ने महज सौ रुपये के स्टांप पर इस प्रक्रिया को चंद घंटों में पूरा कर लिया।

हमीदिया अस्पताल के वार्ड बॉय-टेक्नीशियन हड़ताल पर

तीन महीने से सैलरी नहीं मिलने के विरोध में 500 कर्मचारी दे रहे धरना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हमीदिया अस्पताल में कार्यरत कर्मचारियों को 3 महीने से सैलरी नहीं मिली है। इसके विरोध में 500 से अधिक वार्ड बॉय और टेक्नीशियन मंगलवार से हड़ताल पर हैं। सुबह 7 बजे से सभी कर्मचारी अस्पताल के सामने धरने पर बैठे हैं। बता दें, हमीदिया अस्पताल में रोज 2500 से अधिक की ओपीडी रहती है। वहीं, 60 से अधिक ऑपरेशन होते हैं।

हमीदिया अस्पताल के 500 आउट सोर्स कर्मचारी सुबह से धरने पर बैठे - कर्मचारियों का कहना है कि दिवाली के समय तीन महीने का वेतन बड़ी मुश्किल से दिया था। अब फिर दो माह का वेतन रोक लिया है। जिससे आर्थिक संकट गहरा गया है। महंगाई के इस दौर में वैसे भी 8 हजार रुपए महीना मानदेय दिया जा रहा है। इसमें भुगतान में देरी हो रही है।वहीं, दूसरी तरफ हमीदिया अस्पताल के अधीक्षक सुनीत

टंडन ने बताया कि हड़ताल जैसी कोई बात हमारे सामने नहीं आई है।

इसलिए नहीं मिल पा रही है सैलरी- गांधी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) ने एजाइल कंपनी को पिछले तीन महीने से पेमेंट नहीं किया है। इसके चलते कंपनी ने कर्मचारियों की सैलरी रोक दी। कंपनी की 15 करोड़ से अधिक की रकम जीएमसी पर बकाया होने की बात सामने आई है।

दो महीने जब कर्मचारियों ने हड़ताल की थी, तब कंपनी को 1 करोड़ रुपए दिए गए। जिसके बाद कर्मचारियों की सैलरी जारी की गई। हालांकि, उसमें दिवाली बोनस नहीं था। इससे पहले इन कर्मचारियों ने तीन से चार बार कंपनी को पत्र लिखकर शिकायत की थी। पत्र के जवाब में कंपनी ने सिर्फ आश्वासन दिया था।

यह हैं कर्मचारियों की मांगें

- वेतन महीने की 1 तारीख से 8 तारीख तक मिलना चाहिए ।
- बचा हुआ बोनस नहीं मिला है, वो मिलना चाहिए और आगे से बोनस हमेशा टाइम से मिलना चाहिए।
- सरकारी छुट्टी मिले। डबल ड्यूटी का भुगतान मिले।
- सभी आउट सोर्स कर्मचारियों जॉइनिंग लैटर दिया जाए।
- सैलरी की मांग को लेकर अक्टूबर में भी हड़ताल की थी।
- सैलरी की मांग को लेकर अक्टूबर में भी हड़ताल की थी।
- जब तक मांग पूरी नहीं, हड़ताल जारी रहेगी
- वार्ड बॉय रज्जू लाल ने कहा कि 10 दिसंबर को हमीदिया अस्पताल के आउटसोर्स कर्मचारी हड़ताल पर रहेंगे। हमें दो महीने से सैलरी नहीं दी गई है। तीसरा महीना भी शुरू हो गया है। जिससे हम सभी कर्मचारी काफी परेशान हैं।

सैलरी नहीं मिलने से हम अपने बच्चों का सही से पालन-पोषण नहीं कर पा रहे हैं। हमारे वार्ड बॉय, ओटी टेक्नीशियन एवं ऑपरेटर सभी लोग कम से कम 500-600 की संख्या में 10 दिसंबर को हड़ताल करेंगे। जब तक हमारी मांग पूरी नहीं होगी। तब तक हड़ताल खत्म नहीं करेंगे।

जनकल्याण पर्व
11 - 26 दिसम्बर, 2024

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान
11 दिसम्बर - 26 जनवरी, 2025

शुभारंभ

गरीब, युवा, किसान एवं महिलाओं की समृद्धि के नये अवसरों का मध्यप्रदेश

गीता जयंती के अवसर पर

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

7 हजार से अधिक आचार्यों द्वारा सस्वर गीता पाठ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

द्वारा

1.28 करोड़ लाड़ली बहनों को ₹1572 करोड़

एवं

55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को

₹334 करोड़ का

अंतरण

11 दिसम्बर, 2024 । पूर्वाह्न : 11 बजे

लाल परेड ग्राउंड, भोपाल

सीधा प्रसारण Webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

D-11114/24